ईशान

अंक 1, जनवरी 2021

हिंदी गृह पत्रिका ,उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एनईसैक)

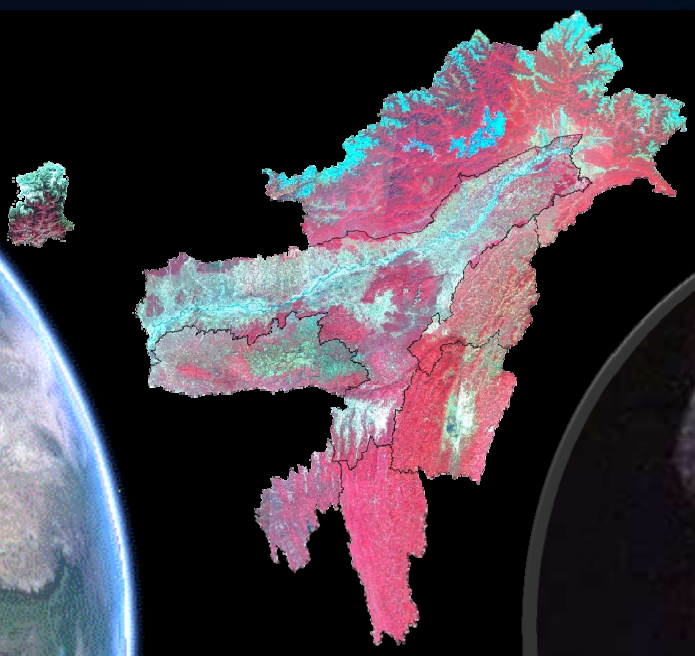

प्रोफ़ेसर सतीश धवन

(25 सितंबर 1920 – 3 जनवरी 2002)

उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र

भारत सरकार, अंतरिक्ष विभाग

उमियम 793103, शिलांग, मेघालय

‘हिंदी पखवाड़ा उत्सव’ और ‘हिंदी तकनीकी संगोष्ठी 2019’ की तस्वीरें

ईशान

अंक 1, जनवरी 2021

हिंदी गृह पत्रिका
उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एनईसैक)

मुख्य संरक्षक
श्री पी.एल.एन राजू

संरक्षक
श्री एसके.जे अब्दुल अज़ीज़

संपादक मंडल
श्री अवनीश शुक्ला
डॉ. कस्तुरी चक्रवर्ती
डॉ. पेबम रॉकी
श्री अंजन देबनाथ
श्री स्नेहाशीष दाश
श्रीमती नमिता रानी पाल मित्र

मुख पृष्ठ परिदृश्य के चित्र का श्रेय:
(स्वर्गीय) श्री कोशी कोशी,
सेवानिवृत्त आई.पी.एस.
स्रोत:https://commons.wikimedia.org/w/index.php?curid=58812540

डॉ.रोक्की पेबम *वैज्ञा./अभि.'एसई' के द्वारा पत्रिका की रूपरेखा और अभिन्यास।*

श्री अंजन देबनाथ *वैज्ञा./अभि.'एसई' के द्वारा पत्रिका के शीर्षक का चयन।*

*****

कृपया अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया भेजें:
संपर्क करें
संपादक मंडल *'ईशान'*
हिंदी अनुभाग
उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र)एनईसैक(
अंतरिक्ष भवनभारत सरकार ,
उमियम 793103, शिलांग, मेघालय

इस अंक में.....

अनुक्रमणिका

	निदेशक का संदेश	i
	प्रधान कार्मिक एवं सामान्य प्रशासन	ii
	संपादक की कलम से	iii
	संस्थान एक झलक	iv
1.	रोजगार में कोविड-19 के प्रभाव से मजदूरो के जीवन में सुधार.....	2
2.	ओडिशा का प्रसिद्ध कोणार्क मंदिर और इसके निर्माण के पीछे की कहानी	4
3.	मेरी माँ.....	5
4.	शिक्षाष्टकम : श्री चैतन्यमहाप्रभु.....	6
5.	लॉककडाउन के बाद की एक भ्रमनकथा.....	8
6.	सतर्क भारत समृद्ध भारत.....	10
7.	पूर्वोत्तर भारत के अद्वितीय वन और वन संरक्षण एवं प्रबंधन में एनईसैक की भूमिका	13
8.	अथक परिश्रम का पथ धर लो.....	15
9.	सम्मान और उपलब्धियां.....	16
10.	आन्तरिक संघर्ष.....	17
11.	**कविता सुमन**.....	18
12.	वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी एवं तकनीकों के सहयोग से हिंदी का विकास.....	19
13.	दैनिक जीवन में योग.....	25
14.	**पकवान** (गोभी मंचूरियन बनाने की विधि).....	26
15.	बटें भाषा से एक कहाँ होंगे.....	27
16.	**हास्य-विनोद**	28
17.	एनईसैक की उल्लेखनीय गतिविधियाँ	29
18.	बाल-चित्रकला.....	31

निदेशक की कलम से

उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एनईसैक), ने अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार के तत्वाधान में विभिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्रों जैसे – भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र(एनईआर) में प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, बुनियादी अवसंरचना योजना, आपदा प्रबंधन सहायता आदि के लिए विकास सहायता गतिविधियों हेतु अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के लाभों को लेने में बहुत महत्वपूर्ण प्रगति की है। वर्ष 2019-2020 के दौरान, कई नई परियोजनाओं के साथ केंद्र की वैज्ञानिक गतिविधियां काफी बढ़ गई है और महत्वपूर्ण परियोजनाओं की संख्या को पूरा करते हुए एनईआर के सभी 8 राज्यों को कवर करते हुए गतिविधियाँ शुरू की गई है।

यह वर्ष एनईसैक के लिए कई गतिविधियों के साथ, पूर्वोत्तर के उपयोगकर्ता समुदाय से मिलने, राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन, पहली बार बीआईएमएसटूईसी (बीमस्टैक) प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करने, सभी अनुप्रयोग क्षेत्र में उपयोगकर्ता परियोजनाओं के विस्तार और क्षमता निर्माण के लिए एक घटनापूर्ण वर्ष है। इन्ही महत्वपूर्ण कार्यो के साथ एक और महत्वपूर्ण घटना को जोड़ते हुए मुझें आप सभी के समक्ष एनईसैक की प्रथम गृह पत्रिका “ईशान” को प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

किसी भी स्वाधीन देश के लिए, जो महत्व उसके राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गान का है, वही उसकी राजभाषा का भी है। एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे संस्कृति, संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है। आज अधिकतम इलेक्रॉनिक माध्यमों, इंटरनेट, वेबसाईट आदि में भी हिंदी का प्रयोग दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। भारत सरकार का राजभाषा विभाग इस दिशा में प्रयासरत है कि केंद्र सरकार के अधीन कार्यालयों में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो। इसी बढ़ते हिंदी के प्रयोग को और अधिक प्रोत्साहित करते हुए उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र की यह प्रथम हिंदी गृह पत्रिका ‘ईशान’ समर्पित है।

हमारे केंद्र को पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए वर्ष 2016-2017 और 2017-2018 के लिए क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ था। निरंतर दो वर्ष प्रथम पुरस्कार की प्राप्ति हमारे लगन और परिश्रम को दर्शाता है साथ ही राजभाषा हिंदी के प्रसार –प्रचार के प्रति हमारे दायित्वों को भी और अधिक बढ़ाता है। राजभाषा हिंदी के विकास के प्रति हमारा केंद्र सदैव सजग रहा है और इसी के परिणाम स्वरूप हम हमारे केंद्र की विविध राजभाषा और अनुप्रयोग संबंधी जानकारियों के साथ हमारी प्रथम गृह पत्रिका ईशान समर्पित करते हैं।

आशा है कि आप सभी प्रबुद्ध पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। आप सभी के सुझावों और विचारों के द्वारा यह पत्रिका और अधिक विकसित और समृद्ध हो सकेगी।

शुभकामनाओं सहित।

पी.एल.एन.राजू

(पी.एल.एन.राजू)

संदेश

उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एनईसैक), उमियम भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में विकासात्मक गतिविधियों का समर्थन करने के लिए अंतरिक्ष विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी द्वारा उल्लेखनीय प्रगति करने के साथ ही भारत सरकार के राजभाषा नीतियों का अनुपालन सुनिश्चित करने और केंद्र के कार्यालयीन काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए भी प्रयासरत है। केंद्र के राजभाषा कार्यान्वयन समिति के प्रयास से इस वर्ष विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर एनईसैक अपने हिंदी गृह पत्रिका के प्रथम अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

गृह पत्रिका समस्त एनईसैक परिवार के प्रयासों का प्रतिफल है। गृह पत्रिका के माध्यम से एनईसैक परिवार के सदस्यों द्वारा अपने विचारों को सहज रूप से अभिव्यक्त करने का अवसर मिला है। गृह पत्रिका के प्रथम अंक के सफल प्रकाशन पर समस्त एनईसैक परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ।

जय हिंद, जय हिंदी!

एसके जे अब्दुल अजीज

(एसके. जे. अब्दुल अज़ीज)
प्रधान का. एवं सा. प्रशा.

संपादक के कलम से

हम उत्तर-पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केन्द्र (एनईसैक) की हिंदी गृह पत्रिका 'ईशान' के प्रथम अंक को अत्यंत हर्ष के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं। इस वर्ष एनईसैक में विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर हिंदी सप्ताह का आयोजन किया जा रहा है एवं इसी उपलक्ष्य में हिंदी गृह पत्रिका के प्रथम अंक का भी प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका द्वारा न केवल केन्द्र के कर्मचारी बल्कि उनके परिवार के सदस्यों को भी अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान किया गया है।

पत्रिका के प्रकाशन की प्रेरणा एनईसैक राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा मिली एवं निदेशक महोदय ने प्रकाशन हेतु प्रेरित भी किया, जिसके फलस्वरूप पत्रिका को आकार एवं स्वरूप मिला। पत्रिका के सभी लेख रुचिकर एवं आकर्षक हैं तथा पत्रिका के माध्यम से एनईसैक में आयोजित की जाने वाली विभिन्न वैज्ञानिक एवं राजभाषा गतिविधियों की जानकारी भी दी गई है। संपादक मंडल पत्रिका के प्रकाशन कार्य में सहयोग प्रदान करने के लिए एनईसैक परिवार का आभार प्रकट करता है।

इस पत्रिका के पाठकों से हमारा निवेदन है कि वे इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों के बारे में अपनी प्रतिक्रियाएं अवश्य भेजें। पत्रिका को बेहतर बनाने के लिए आपके सुझावों, आवश्यक परामर्शों का सदैव स्वागत किया जायेगा।

"आकल्पं रविमेव भास्वनकरी ईशान"

(यह ईशान कल्पपर्यन्त सूर्य के समान प्रकाशित होता रहे)

16 जनवरी 2021

भारत सरकार, अंतरिक्ष विभाग
उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एन.ई-सैक)

संस्थान एक झलक

1. प्रस्तावना

उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एन.ई-सैक), अंतरिक्ष विभाग, भारत सरकार तथा उत्तर पूर्वी परिषद (उ.पू.प) के संयुक्त पहल, मेघालय सोसायटी पंजीकरण अधिनियम 1983, के अंतर्गत एक सोसायटी है। केंद्र ने अंतरिक्ष विज्ञान और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र (एन.ई.आर) के आठ राज्यों को 19 साल से अधिक समर्पित सेवाएं प्रदान की है। केंद्र के प्रमुख उद्देश्य है – 1. क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों और अवसंरचना नियोजन के विकास / प्रबंधन पर गतिविधियों का समर्थन करने के लिए एक परिचालन सुदूर संवेदन और भौगोलिक सूचना प्रणाली की सहायता से प्राकृतिक संसाधन सूचना का आधार प्रदान करना। 2. क्षेत्र के शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, आपदा प्रबंधन सहायता और विकास संबंधी परिचालन (प्रचालनी) उपग्रह संचार अनुप्रयोग सेवाएं प्रदान करना। 3. अंतरिक्ष और वायुमंडलीय विज्ञान क्षेत्र में अनुसंधान करना और एन.ई.आर के विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं के साथ यंत्रीकरण हब और नेटवर्किंग स्थापित करना। 4. आपदा प्रबंधन के लिए सभी संभव अंतरिक्ष आधारित समर्थन के लिए सिंगल विंडों डिलवरी को सक्षम करना। 5. भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में क्षमता निर्माण के लिए एक क्षेत्रीय स्तर पर अवसंरचना स्थापित करना।

2. संगठनात्मक संरचना

एन.ई-सैक की सभी नीतियों, मामलों, व्यापार का निर्णय एन.ई-सैक सोसायटी द्वारा किया जाता है। अध्यक्ष एन.ई.सी, एन.ई-सैक सोसायटी की अध्यक्षता करते है और सचिव, अं.वि/अध्यक्ष इसरो इसके उपाध्यक्ष है। सोसायटी के अन्य सदस्य है – सचिव एन.ई.सी; आठ पूर्वोत्तर राज्यों के मुख्य सचिव, अं.वि. के वरिष्ठ वैज्ञानिक, एन.ई.सी. के अधिकारीगण और पूर्वोत्तर के शिक्षाविद। सोसायटी की सलाह के तहत एक शासी परिषद (जी.सी.), सोसायटी/ केंद्र की गतिविधियों का प्रबंधन करती है। सचिव, अं.वि./ अध्यक्ष इसरो इस जी.सी. के अध्यक्ष है, सचिव, एन.ई.सी. वैकल्पिक अध्यक्ष है। मुख्य सचिव, मेघालय; एन.ई.आर. राज्य सरकारों के प्रतिनिधिगण और इस क्षेत्र में केंद्र सरकार एजेंसियों के प्रतिनिधि जी.सी के अन्य सदस्य है।

3. कार्य और गतिविधयां

केंद्र के वैज्ञानिक कार्यक्रम क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुसार निर्देशित होते हैं और एन.ई-सैक सोसायटी और शासन परिषद द्वारा इसकी वार्षिक समीक्षा की जाती है। चालू वर्ष के दौरान, एन.ई-सैक ने प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन, संरचनात्मक योजना, स्वास्थ्य, शिक्षा, उपग्रह संचार और वायुमंडल विज्ञान अनुसंदान के क्षेत्र में पूर्वोत्तर राज्यों के कवर करने वाली कई परियोजनाओं को लिया और उन्हें पूरा किया। केंद्र ने इस क्षेत्र में प्रयोक्ता एजेंसियों द्वारा प्रायोजित कई अनुप्रयोग परियोजनाएं लागू की है, इसरो अं.वि द्वारा वित्त पोषित / समन्वित राष्ट्रीय / क्षेत्रीय परियोजनाएं, भू-प्रेक्षण अनुप्रयोग मिशन (ई.ओ-ए) के तहत अनुसंधान और विकास परियोजनाएं, आपदा जोखिम घटाव हेतु उत्तर पूर्वी क्षेत्रीय नोड के तहत उपग्रह संचार (सैटकॉम) कार्यक्रम, आपदा जोखिम निम्नीकरण हेतु उत्तर पूर्वी क्षेत्रीय नोड के तहत (एन.ई.आर-डी.आर.आर) के तहत आपदा प्रबंधन समर्थन (डी.एम.एस) कार्यक्रम, वायुमंडल विज्ञान कार्यक्रम (ए.एस.पी) के तहत अंतरिक्ष और वायुमंडलीय विज्ञान कार्यक्रम।

4. प्रमुख उपलब्धियाँ

एन.ई-सैक ने भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र (एन.ई.आर) में प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन, अवसंरचना नियोजन, आपदा प्रबंधन समर्थन, आदि जैसे विभिन्न प्रमुख क्षेत्रों के लिए अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के लाभों को विकसित करने में बहुत महत्वपूर्ण प्रगति की है। वर्ष 2019-2020 के दौरान, केंद्र की वैज्ञानिक गतिविधियों में कई नई परियोजनाओं /गतिविधियों में काफी वृद्धि हुई है, जबकि वर्ष के दौरान कई परियोजनाओं को पूरा किया गया है।

केंद्र रेशम बोर्ड (सी.एस.बी) के दूसरे चरण में देश के 26 राज्यों को कवर करने वाले रेशम उत्पादन विकास में सुदूर संवेदन और जी.आई.एस के अनुप्रयोगों पर प्रायोजित परियोजना को राज्य सुदूर संवेदन केंद्रों के सहयोग से सफलतापूर्वक पूरा किया गया है। परियोजना के दूसरे चरणों को सफलता पूर्वक पूरा करने और परियोजना एटलस और सिलक्स पोर्टल के रूप में परियोजना आटपुट को औपचारिक रूप से जारी करने के लिए, एन.ई-सैक में 5-6 अगस्त, 2019 के दौरान एक राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला आयोजित की गई थी। एन.ई-सैक और केंद्रीय मुगा एरी अनुसंधान और प्रशिक्षण संस्थान (सी.एम.ई.आर व टी.आई) के बीच एक सहयोगी परियोजना के भाग स्वरूप भू-स्थानिक तकनीकों का उपयोग करते हुए चयनित मुगा रेशमकीट रोगों और कीटों की प्रारंभिक चेतावनी के लिए एक निर्णय समर्थन प्रणाली का विकास किया गया है। एन.ई.आर में सी.एस.बी के उत्तर पूर्वी क्षेत्र वस्त्र संवर्धन योजना (एन.ई.आर.टी.पी.सी) कार्यक्रम के तहत बनाई गई संपत्ति की जियो-टैगिंग पर एक नई परियोजना भी वर्ष के दौरान शुरू की गई है।

परियोजना का पहला चरण “प्रत्येक राज्य के एक जिले में एक बागवानी फसल के क्षेत्र के विस्तार के लिए विश्लेषण” पर सफलता पूर्वक भू-सूचना (चमन) कार्यक्रम का उपयोग करते हुए समन्वित बागवानी मूल्यांकन और प्रबंधन के तहत पूरा किया गया है। परियोजना के दूसरे चरण को एन.ई.आर के 16 जिलों में संभावित बागवानी फसलों के लिए साइट उपयुक्ता विश्लेषण के लिए किया जा रहा है। परियोजना का दूसरा चरण एन.ई.आर के 16 जिलों में संभावित बागवानी फसलों के लिए साइट उपयुक्ता विश्लेषण के लिए किया जा रहा है। मेघालय में सी.सी.ई की योजना और निगरानी के लिए कई परियोजनाओं के लिए महत्वपूर्ण प्रगति हुई जैसे चयनित फसलों का एकर अनुमान और क मोबाइल एप का विकास। एन.ई.आर (सुफालम कार्यक्रम के तहत) में मक्का क्षेत्र और उत्पादन अनुमान, मेघालय में ब्लॉक वार साली धान (शीतकालीन चावल) क्षेत्रों की पहचान, मेघालय के पूर्वी खासी हिल्स जिले में संतरे के वृक्षारोपण के लिए उपयुक्त क्षेत्रों की पहचान, मेघालय की जिलेवार मिट्टी की उर्वरता की स्थिति का मानचित्रण, मरूस्थलीकण और भूमि क्षरण निगरानी, वर्ष 2019-2020 के दौरान एन.ई.आर और परश्चिम बंगाल आदि के छह राज्यों में भेद्यता आकलन।

वानिकी में सुदूर संवेदन अनुप्रयोगों के क्षेत्र में, एन.ई-सैक अरूणाचल प्रदेश में वन कार्य योजना तैयार करने के लिए आर.एस और जी.आई.एस इनपुट जैसी विभिन्न परियोजनाओं को अंजाम दे रहा है, मिज़ोराम में वन कार्य योजना तैयार करने के लिए भू-स्थानिक तकनीकों का वन के बढ़ते स्टॉक का आकलन, मणिपुर के विभिन्न विभिन्न वन प्रभागों में दावाग्नि का भू-स्थानिक मूल्यांकन, त्रिपूरा के मलेरिया प्रवण धलाई जिले में झूम क्षेत्र मानचित्रण और निगरानी, आर्द्र भूमि संरक्षण की तैयारी के लिए इनपुट- उमियम जलाशय, मेघालय का एक केस अध्ययन, टाइम सीरीज सैटलाइट डेटा का उपयोग करके एनईआर की वनस्पति फेनेलॉजी का विश्लेषण, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान की भूमि कवर गतिकी, एनईआर आदि जंगलों में उपरोक्त ज़मीन के बायोमास के आकलन में एस.ए.आर अनुप्रयोग।

बाढ़ की चेतावनी प्रणाली (एफ.एल.ई.डब्ल्यू.एस) कार्यक्रम के तहत बाढ़ की चेतावनी के लिए औसतन वर्ष-दर-वर्ष चेतावनी सफलता स्कोर 75% और 24 से 36 घंटे के सतर्क नेतृत्व समय के लिए औसत अलर्ट प्राप्त किया जा सकता है। यह परियोजना अब असम के सभी बाढ़ प्रभावित जिलों को राजस्व सर्कल स्तर में

कार्रवाई योग्य बाढ़ अलर्ट के साथ कवर करती है। एफ.एल.ई.डब्ल्यू.एस को अन्य उत्तर पूर्वी राज्यों तक बढ़ाया जा रहा है। पायलट आधार पर 2019 के लिए मेघालय और त्रिपूरा को कवर किया गया था। अन्य प्रमुख परियोजनाएं जो जल संसाधनों के क्षेत्र में की जाती है, असम नदी एटलस की तैयारी, एन.ई भारत के लिए आई.डब्ल्यू.एम.पी वाटरशेड की निगरानी और मूल्यांकन आदि है।

शहरों और अवसंरचना नियोजन के हिस्से के रूप में, केंद्र ने मास्टर प्लान/विकास योजना, परिवहन योजना, शहरी स्थल उपयुक्तता विश्लेषण, शहरी पर्यावरण योजना आदि की तैयारी में योगदान दिया है। शिलांग योजना क्षेत्र के लिए जी.आई.एस आधारित मास्टर प्लान/ विकास योजनाओं का निर्माण 1:4000 पैमाने पर 312 किमी के क्षेत्र को कवर किया जाता है। समूह द्वारा किए जा रहे कई अन्य अन्य अध्ययन कोहिमा शहर, सीमा क्षेत्र विकास योजना, मेघालय और मेघालय में खेती/ झूम खेती को स्थानांतरित करने के भू-स्थानिक डेटाबेस के निर्माण के लिए जी.आई.एस आधारित दृष्टिकोण है।

मेघालय में कोयला खनन से प्रभावित क्षेत्रों की योजना और बहाली के लिए भू-स्थानिक क्षेत्र भू-स्थानिक डेटाबेस तैयार किया गया है। कुछ अन्य महत्वपूर्ण अध्ययन जैसे भूकंप पूर्वर्ती पहचान, नदी की गतिशीलता और मानस – बेकी नदी के कटाव के लिए टी.ई.सी विसंगतियों का आकलन, मेघालय में टेक्टॉनिक अध्ययन के लिए मोर्फोटेकटॉनिक विश्लेशण, 7.6 Mw पपुआ न्यू गिनी भूकंप आदि से पहले आयनमंडल में भूकंपीय गड़बड़ी आदि केंद्र द्वारा लिया गया है।

उत्तर पूर्वी स्थानिक डेटा रिपोजिटरी (एनई.एस.डी.आर) विभिन्न उपयोगकर्ता समूहों के लाभ के लिए बड़ी मात्रा में डेटा, वेब सेवाओं, अनुप्रयोगों और बाहरी डेटा लिंक के साथ समृद्ध है। विभिन्न विषयों पर लगभग 558 डेटासेट नौ प्रमुख श्रेणियों – आधार प्रशासनिक सूचना, अवसंरचना, भूमिसंसाधन, जल संसाधन, संपत्ति और उपयोगिताओं, इलाके, आपदा प्रबंधन सहायता आदानों और कार्य योजना इनपुट में उपलब्ध कराए जाते हैं। कई अन्य प्रमुख परियोजनाएं जो सफलता पूर्वक की गई है वे है- मलेरिया और अन्य बिमारियों के शीघ्र निदान और उपचार के लिए मोबाइल आधारित एकीकृत निगरानी प्रणाली, भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी का उपयोग कर एनईआर में एन.ई.सी वित्त पोषित परियोजनाओं/ योजवनाओं की भू-टैगिंग और निगरानी, एन.ई.आर के मुख्य निर्वाचन अधिकारियों (सी.ई.ओ) के कार्यालयों के लिए चुनाव ई-एटलस, बी.टी.सी की योजनाओं के जियोटैगिंग के लिए जियोटैगिंग डैशबोर्ड सह मोबाइल अनुप्रयोग, रेशम उत्पादन परिसंपत्तियों के जियोटैगिंग के लिए डैशबोर्ड सह मोबाइल अनुप्रयोग, मुगा रोग प्रारंभिक चेतावनी प्रणाली, शिलांग के लिए क्राइम जी.आई.एस, असम मृदा विभाग के लिए जियोटैगिंग ऐप, कोविड 19 वेब अनुप्रयोग आदि का विकास।

केंद्र ने यू.ए.वी सुदूर संवेदन (यू.ए.वी-आर.एस) और अनुप्रयोगों के क्षेत्र में अपनी गतिविधियों का विस्तार किया है। 3 डी प्रिंटिंग तकनीक की प्रगति के साथ, प्रायोगिक उद्देश्य के लिए इन-हाउस मिनी यू.ए.वी विकसित किए गए है। यू.ए.वी टीम ने कुछ अनुठे अनुप्रयोगों का प्रदर्शन किया है जैसे कि निरंतर निगरानी के लिए यू.ए.वी का निर्माण, आपदा के समय दवा, भोजन और राहत सामग्री छोड़ने के लिए ड्रॉप तंत्र आदि। टीम ने वर्ष 2019-2020 में एन.ई.आर और देश के कुछ अन्य क्षेत्रों में विभिन्न उपयोगकर्ता विभागों के लिए 14 से अधिक यू.ए.वी सर्वेक्षण किए है। एन.ई-सैक ने आई.आई.एससी, बेंगलूर के साथ मिलकर एक उड़ान में कई स्थानों से कई पानी के नमूने एकत्र करने के लिए एक उभयचर यू.ए.वी विकसित किया है। केंद्र ने सामान्य लक्ष्य को पूरा करने के लिए स्वराज ड्रॉन के एक नेटवर्क को विकसित करने के लिए के.जे. सौम्या कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के साथ सहयोग किया है। अन्य महत्वपूर्ण परियोजनाएं जो सफलता पूर्वक की जाती है वे है- महादेव-तोलोई-फुटेरों सड़क के निर्माण के उपयुक्त मार्ग संरेखण योजना के आधार पर आर.एस और जी.आई.एस, मेघालय पर बड़े पैमाने पर सर्वेक्षण और सामुदायिक सामुदायिक आरक्षित वनों का मानचित्रण, उमियम झील, मेघालय के लिए यू.ए.वी का उपयोग करके वेटलैंड सर्वेक्षण और मानचित्रण तथा ललितपुर, उत्तर प्रदेश, ललितपुर में गिरार रिज का सर्वेक्षण और मानचित्रण आदि ।

उपग्रह संचार के क्षेत्र में, एन.ई-सैक इसरो के सामाजिक विकास कार्यक्रमों जैसे- टेली-शिक्षा, टेली-चिकित्सा, आपातकालीन संचार प्रणाली को उपग्रह संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग के माध्यम से कार्यान्वित कर रहा है। एन.ई-सैक ने क्षेत्र में दूरस्थ शिक्षा और दूरस्थ स्वास्थ्य सेवा के लिए व्यापक नेटवर्क स्थापित किया है। सुविधाएं जैसी- सामग्री उत्पादन के लिए सैटकॉम स्टूडियों, आपातकालीन संचार के लिए परिवहनीय डबल्यू.एल.ल-वी-सैट, इसरो-डी.एम.एस वी.पी.एन नेटवर्क के तहत प्राथमिक नोड, टेली-शिक्षा नेटवर्क के तहत सैटलाइट इंटरएक्टिव टर्मिनल, अन्य इसरो केंद्रों के बीच सुरक्षित संचार के लिए स्पेसनेट संयोजकता, का-बैंड प्रचार प्रयोग सुविधा, इसरो द्वारा विकसित मोबाइल उपग्रह सेवा टर्मिनल आदि एन.ई-सैक में उपलब्ध है। उत्तर पूर्वी राज्यों में टेली-शिक्षा परियोजना के तहत, सभी सात हब(एच.यू.बी) सह शिक्षण अंत और 329 उपग्रह अन्योन्यक्रिया टर्मिनल (एस.आई.टी) सभी पूर्वोत्तर राज्यों में चालू है। इन नेटवर्कों द्वारा 2019-2020 में सैकड़ों लाइव और रिकॉर्ड किए गए कार्यक्रमों का प्रसारण किया गया और 50000 से अधिक छात्रों/ अन्य समूहों को इन नेटवर्कों द्वार लाभान्वित किया गया। एन.ई-सैक आपातकालीन संचार के लिए जीसैट-6 उपग्रह के तहत कई उपग्रह मोबाइल रेडियों (एस.एम.आर) और सैटस्टीव टर्मिनलों से सुसज्जित है । इसरो-ओनेरा- सी.एन.ई.एस संयुक्त का-बैंड प्रसार प्रयोग उपग्रह संचार में भू-संचार के उपयोग के लिए का-बैंड संकेत के प्रसार पर वायुमंडलीय प्रभावों का आकलन करने के लिए एन.ई-सैक पर परिचालन कर रहा है।

अंतरिक्ष और वायुमंडलीय विज्ञान क्षेत्र में, एन.ई-सैक में समूह, भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए लघु और मध्यम श्रेणी के मौसम पूर्वानुमान में सुधार करने के लिए अनुसंधान में लगे हुए है, और गंभीर मौसम पूर्वानुमान में सुधार पर ध्यान केंद्रित करते है, तड़ित पूर्वानुमान सहित समूह की एक और प्रमुख गतिविधि है। इसके अलावा समूह प्रमुक आपदाओं जैसे – बाढ़, गंभीर तूफान, तड़ित आदि के प्रबंधन और एसबैंड पोलारीमैट्रिक रडार, स्वचालित मौसम केंद्रों, उपग्रहों, संख्यात्मक मॉडल, आदि से डेटा का समर्थन और महत्वपूर्ण इनपुट प्रदान करता है। समूह द्वारा किए जा रहे अन्य अध्ययन है- एक पहाड़ी इलाके में ऐरोसॉल को अवशोषित करने की लंबवत रूपरेखा, पूर्वी हिमालयी क्षेत्र में ऐरोसॉल लक्षण वर्णन, उमियम और तवांग पर ऐरोसॉल की क्षेत्रीय विशेषताएं, पहाड़ी स्टेशन पर क्लाउड माइक्रोफिशियल गुणों पर अध्ययन, ध्रुवीय मापी डॉपलर मौसम रेडार का उपयोग कर मानसून पूर्व मौसम प्रणाली का अवलोकन और विश्लेषण, डब्ल्यू.आर.एफ मॉडल का उपयोग करते हुए मानसून सिमुलेशन में इनसैट-3डी रेडिएंस आत्मसात का प्रभाव, डी.डब्ल्यू.आर डेटा के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अप्रत्यक्ष उपयोग के साथ डी.डब्ल्यू.आर.एफ मॉडल के द्वारा भारत के एन.ई.आर पर गरज का सिमुलेशन, भारत के एन.ई.आर के ऊपर स्थान आधारित तड़ित वर्तानुमान सुधार, त्रिपूरा के अंबासा क्षेत्र में मलेरिया महामारी पर मौसम संबंधी मापदंडों के प्रभाव का अध्ययन।

एन.ई-सैक विशेष रूप से एन.ई क्षेत्र से उपयोगकर्ता विभागों, शिक्षाविदों और छात्रों के समुदायों की मांगों को संबोधित करते हुए अपनी अपनी आउटरीच गतिविधियों का विस्तार कर रहा है। इस वर्ष के दौरान विभिन्न विषयों पर कई प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएं जैसे कि आर.एस व जी.आई.एस का आधारभूत, सुदूर संवेदन और कई और सफलता पूर्वक संपन्न हुई है। बड़ी संख्या में छात्र अपने बाहरी परियोजना कार्य के लिए एन.ई-सैक का चयन करते हैं। इसके अलावा बड़ी संख्या में विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों का प्रतिनिधित्व करने वाले छात्रों ने वर्ष के दौरान अपने अध्ययन दौरे कार्यक्रम के एक भाग स्वरूप में एन.ई-सैक का दौरा किया है। इसरो 'युवा वैज्ञानिक कार्यक्रम युविका' का आयोजन 13 मई से 25 मई, 2019 तक किया गया था। इस कार्यक्रम में अरूणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपूरा और पश्चिम बंगाल प्रत्येक से तीन छात्रों ने भाग लिया है।

डॉ. विक्रम साराभाई की जन्म शताब्दी को चिह्नित करने के लिए इसरो के राष्ट्रव्यापी विक्रम साराभाई शताब्दी कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, एन.ई-सैक ने 2 से 4 जनवरी 2020 तक त्रिपूरा मेघालय, और सिक्किम में तीन ऐसे कार्यक्रम आयोजित किए , क्रमशः 25-26 जनवरी 2020 और 4-6 मार्च 2020 ।

20-22 नवंबर के दौरान उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एन.ई-सैक) और नॉर्थ इस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी (नेहू) द्वारा संयुक्त रूप से भारतीय भूमितिकी सोसायटी (आई.एस.जी) और भारतीय सुदूर संवेदन संस्थान (आई.एस.आर.एस) "एन.ई.आर पर विशेष जोर देने के साथ सतत विकास के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी में नवाचार" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था।

*****

प्रोफ़ेसर सतीश धवन

प्रोफ़ेसर सतीश धवन (25 सितंबर 1920 – 3 जनवरी 2002) एक भारतीय गणितज्ञ और वांतरिक्ष इंजीनियर थे, उन्हे व्यापक रूप से भारत में प्रयोगात्मक तरल गतिकी अनुसंधान के जनक के रूप में माने जाते हैं।

श्रीनगर में जन्मे, प्रो. सतीश धवन की शिक्षा भारत में एवं आगे चलकर संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में संपन्न हुई। वे भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के सफल और स्वदेशी विकास का नेतृत्व करते हुए, विक्षोभ और परिसीमा परतों के क्षेत्र के प्रख्यात शोधकर्ताओं में से एक थे। एम.जी.के.मेनन के उपरान्त वह 1972 में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के तीसरे अध्यक्ष बनें।

उन्होंने ग्रामीण शिक्षा, सुदूर संवेदन और उपग्रह संचार पर अग्रगामी प्रयोग किए। उनके प्रयासों से इन्सैट-एक दूरसंचार उपग्रह, आईआरएस-भारतीय सुदूर संवेदन उपग्रह और ध्रुवीय उपग्रह प्रमोचन यान (पीएसएलवी) जैसी प्रचालनात्मक प्रणालियों का मार्ग प्रशस्त हुआ जिसने भारत को अंतरिक्ष की यात्रा करने वाले राष्ट्रों के संघ में खड़ा कर दिया।

उनकी मृत्यु 3 जनवरी 2002 को बेंगलुर में हुई, मृत्यु के बाद दक्षिण भारत के चेन्नई की उत्तरी दिशा में लगभग 100 कि.मी. की दूरी पर श्रीहरिकोटा, आंध्र प्रदेश में स्थित भारतीय उपग्रह प्रक्षेपण केंद्र के रूप में पुनर्नामकरण किया गया।

सतीश चंद्र धनव राजकीय कॉलेज फॉर ब्वायज का नाम उनके नाम पर रखा गया है।भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, रोपड़ मे यांत्रिक अभियंत्रिकी भवन का नाम भी उनके नाम पर सतीश धवन खंड, आईआईटी रोपड़ के रूप में रखा गया है।

प्रो. सतीश धवन का जन्म शताब्दी कार्यक्रम 25 सितम्बर 2020 को वर्चुअल मोड के माध्यम से आयोजित किया गया था। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम में उनके द्वारा दिए गये योगदान को मनाने के लिए इसरो मुख्यालय, अंतरिक्ष विभाग में कार्यक्रम का आयोजन किया गया था।

रोजगार में कोविड-19 के प्रभाव से मज़दूरो के जीवन में सुधार

अर्थव्यवस्था के संकुचन से रोजगार की स्थिति में संकट उत्पन्न हो रहा है जिसके कारण रोज़गार देने के नवीन क्षेंत्रो में कमी आ रही हैं। इस परिस्थिति से निपटने के लिये भारत सरकार ने रोज़गार 'गरीब कल्याण रोज़गार अभियान' जून में शुरू किया गया हैं जिसका उद्देश्य ग्रामीण भारत में आजीविका के नये अवसर प्रदान करना हैं । यह रोज़गार योजना एक तात्कालिक राहत हो सकती है, परन्तु सभ्य शहरी नौकरियों का विकल्प नहीं हो सकती।

रोज़गार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए कदम:

शहरी क्षेत्रों में श्रमिकों की आजीविका को सुरक्षित करने के लिए दो चुनौतियां नीतिगत हस्तक्षेप करती हैं:

सबसे पहले, अधिकाधिक रोजगार के अवसर उपलब्ध करायें जायें।

और दूसरा, अच्छी मजदूरी एवं कार्यस्थल की सुगमता के लिए बुनियादी सुविधाओं का प्रसार करते हुए, रोजगार के कमी को दूर किया जाना। वर्तमान संकट के लिए शहरी रोजगार के मुद्दे से निपटने के लिए एक बहु-आयामी रणनीति का निर्धारण करना।

पहला तत्व, शहरीकरण के पैमाने को देखते हुए, शहरी रोज़गार सृजन कार्यक्रमों पर ध्यान स्थानीय सरकारों के समन्वय से होना चाहिए, जो शहरों द्वारा सामना की जाने वाली अन्य समस्याओं को हल करने के लिए महत्वपूर्ण है। चूंकि ये समस्याएं कठिन हैं, स्थानीय स्तर पर इनका समाधान करने के लिए अधिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। चुने गए प्रतिनिधियों, ट्रेड यूनियनों, उद्यमियों और सामुदायिक समूहों को शामिल करके स्थानीय गठबंधनों के गठन से संसाधन जुटाए जा सकते हैं।

दूसरा तत्व, स्थानीय पहल से रोज़गार-गहन निवेश नीतियों की रूपरेखा बनाना एवं कार्यान्वित करना । इन नीतियों को सरकार के साथ-साथ निजी उद्यमियों के पहल को भी गले लगाना चाहिए। श्रम और पूंजी के बीच अनुकूल संविदात्मक संबंधों द्वारा निजी निवेश को सुगम बनाने की आवश्यकता है। प्रौद्योगिकी और उत्पादकता वृद्धि से संबंधित मुद्दों पर श्रमिकों और उद्यमियों के हितों को परिवर्तित करने के साथ उद्यम निर्माण के रणनीति का एक अभिन्न अंग बनाने की आवश्यकता है। औद्योगिकीकरण का आधार लघु और सूक्ष्म उद्योग के लिए अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है, जिससे श्रम और पूंजी के बीच हितों को संतुलित किया जा सकें।

तीसरा तत्व, शहरी बुनियादी ढांचे को प्राथमिकता देना होगा क्योंकि यह स्थानीय अर्थव्यवस्था में कुल निवेश का एक बड़ा हिस्सा है।

हालांकि, इनमें से अधिकांश निवेश शायद ही कभी आधारिक संरचना, गरीब शहरी निवासियों को लाभान्वित करते होगें। क्योंकि आवास, सड़क, सीवरेज और पानी की व्यवस्था उनकी आवश्यकताओं के लिए अपर्याप्त हैं। नगर निगम के बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए एक श्रम-गहन दृष्टिकोण पूंजीगत गहन-दृष्टिकोण के लिए एक लागत प्रभावी विकल्प हो सकता है क्योंकि मज़दूरी दरें कम हैं। आधारिक संरचना निवेश, रोज़गार सृजन कमाई उत्पन्न करेगा एवं छोटे

उद्यम निर्माण में योगदान देगा। कम-लागत वाले आवास का निर्माण एक गतिविधि है जिससे श्रम-गहन तरीकों का सद्उपयोग किया जा सकता है।

चौथा तत्व, भारत के समस्त शहरों एवं कस्बों में बड़े पैमाने पर चिकित्सा, स्वास्थ्य और स्वच्छता के बुनियादी ढांचे के निर्माण की दिशा में उन्मुख एक शहरी रोज़गार योजना का तत्काल शुभारंभ करना। जो रोज़गार सृजन के अन्य क्षेंत्रो में राज्य और स्थानीय सरकारों के कल्याणकारी हस्तक्षेप के हिस्से के रूप में आवश्यक सेवाओं के नेटवर्क का विस्तार करने के लिए हो सकता है। शहरों से लौटे श्रमिकों को अवशोषित करने के लिए हमारी ग्रामीण अर्थव्यवस्था की क्षमता बहुत ही कम है और इन श्रमिकों को एक सभ्य जीवन प्रदान करने के लिए कृषि की व्यवहार्यता संदिग्ध है। वास्तव में, इनमें से कई श्रमिकों ने अपने पारंपरिक कार्य खेत क्षेत्र को छोड़ दिए होंगे क्योंकि कृषि से आय उनके अस्तित्व के लिए अपर्याप्त रही होगी।

फ्रांसिस दत्ता

वैज्ञा./अभि. 'एससी'

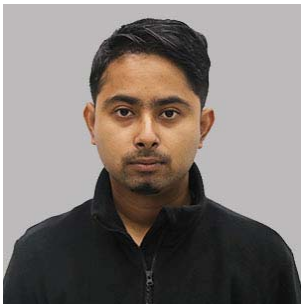

ओडिशा का प्रसिद्ध कोणार्क मंदिर और इसके निर्माण के पीछे की कहानी

कोणार्क का सूर्य मंदिर भारत के प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है। यह उड़ीसा का सबसे प्रसिद्ध पर्यटन स्थल है। वर्ष 1984 में यूनेस्को ने इसे विश्व धरोहर स्थल घोषित किया था। यहां पर हिंदू धर्म के सूर्य देवता की पूजा की जाती है। यह ओडिशा राज्य के पुरी शहर से लगभग 35 किलोमीटर दूर चंद्रभागा नदी के तट पर स्थित है। यह मंदिर अपनी विशालता, निर्माण, सुंदरता, वास्तुकला और मूर्तिकला के लिए अद्वितीय और ओडिशा की वास्तुकला की सुंदरता को प्रदर्शित करता है। मंदिर का वास्तुकला इसके आकर्षण का केंद्र है जो वास्तव में एक रथ का आकार है। सम्पूर्ण मन्दिर स्थल को बारह जोड़ी पहियों पर सात घोड़ों द्वारा संचालित रथ के रूप में बनाया गया है। कोणार्क सूर्य मन्दिर को ब्लैक पैगोडा के रूप में भी जाना जाता है।

कोणार्क मंदिर का निर्माण 13 वीं शताब्दी के मध्य में गंगा राजवंश के राजा नरसिम्हदेव प्रथम द्वारा किया गया था। यह मंदिर 1200 कारीगरों की मदद से बनाया गया था, जिसका नेतृत्व मुख्य वास्तुकार बिशू महाराणा ने किया था। इतिहास के अनुसार, मंदिर के निर्माण को पूरा करने के लिए राजा ने 5 साल की समय सीमा निर्धारित किया था। लेकिन जैसे-जैसे बारह साल के अंत के करीब पहुंच गया, निर्माण पूरा होने के करीब था। अचानक मुख्य वास्तुकार विशू महाराणा और उनके कारीगरों को कलश (मंदिर का ताज पत्थर) को उचित स्थिति में रखने में कठिनाई का सामना करना पड़ा। राजा नरसिंहदेव ने सुबह तक की समय-सीमा की घोषणा की थी, विफल होने पर सभी 1200 कारीगर मारे जाएंगे। और परियोजना के मुख्य वास्तुकार होने के नाते, विशू महाराणा परेशान थे। उस समय, विशू महाराणा का 12 साल का बेटा, धर्मपद अपने पिता से मिलने आया था। यह सुनकर धर्मपद ने तुरंत ऊपर की तरफ उठ गया और उसने तुरंत उस चीज को ठीक करवाया और कलश को उसके उचित स्थिति में रख दिया। मंदिर के पूरा होने को देखकर सभी कारीगर बहुत खुश हुए, लेकिन उन्हें अपने स्वयं के जीवन के लिए डर था यदि राजा को पता चला कि एक बच्चे ने उनके बजाय काम पूरा कर लिया है। उन्होंने मांग की कि धर्मपद को मार दिया जाए। अंत में, धर्मपद ने सभी कारीगरों के जीवन को बचाने के लिए और सबका मान रखने के लिए, मंदिर के शीर्ष पर चढ़ गया और अपने जीवन का बलिदान करने के लिए समुद्र के गहरे नीले पानी में कूद गया।

एक युवा लड़का जिसने अब तक का सबसे बड़ा मंदिर बनाकर सर्वोच्च वैभव प्राप्त किया, उसने दूसरों के जीवन को बचाने के लिए खुद को बलिदान कर दिया। सैकड़ों वर्षों के बाद, सूर्य मंदिर बर्बाद हो गया है लेकिन धर्मपद अब भी किंवदंती में और ओडिशा के हर कारीगर की महत्वाकांक्षा में जीवित है।

स्नेहाशीष दाश

पुस्तकालय सहायक 'ए'

मेरी माँ

माँ, एक साधारण नारी
क्या-क्या नहीं करती वह?
नौकरी करती, घर संभालती
पर, मुँह से कभी भी आह न करती ।

दफ्तर से जब घर वह आती,
उनकी गोदी में सिर रख देती मैं,
खुदकी थकान को भूला वह,
एकटक मुझे निहारने लगती।
खाना बनाती, हमें पढ़ाती,
कभी किसीको अपनी व्यथा न कहती।

चट्टान जैसी मजबूत वह लगती,
पानी जैसी कभी बहने वह लगती।
मन में उनके क्या चलता है,
कभी उसे वह व्यक्त न करती।

अभी सोचती हूँ तो लगता है,
माँ नहीं एक साधारण नारी।
वह तो है एक त्याग की मूरत,
ममता में लिपटी एक प्यारी सूरत।

श्रीमती रेखा भराली गोगोई
वैज्ञानिक/अभियंता 'एस ई'

"शिक्षाष्टकं"

श्री चैत्रय महाप्रभु के द्वारा लिखित

चैतन्य महाप्रभु का जन्म संवत् १५४२ विक्रमी की फाल्गुनी पूर्णिमा, होली के दिन बंगाल के नवद्वीप नगर में हुआ था। उनके पिता का नाम पंडित जगन्नाथ मिश्र और माता का नाम शचीदेवी था। पिता सिलहट के रहनेवाले थे। नवद्वीप में पढ़ने के लिए आये थे। भगवान श्री गौरसुन्दर चैतन्य महाप्रभु ने अपने शिष्यों को श्रीकृष्ण-तत्त्व पर ग्रन्थों की रचना करने की आज्ञा दी, जिसका पालन उनके अनुयायी आज तक कर रहे हैं। वास्तव में श्री चैतन्य महाप्रभु द्वारा जिस दर्शन कि शिक्षा दी गयी उस पर हुई व्याख्याएं परम विस्तृत एवं सुदृढ़ हैं। यद्यपि भगवान चैतन्य महाप्रभु अपने युवावस्था में ही परम विद्वान के रूप में विख्यात थे, किन्तु उन्होंने हमें केवल आठ श्लोक ही प्रदान किये जिन्हे "शिक्षाष्टक" कहते हैं। इन आठ श्लोकों में श्रीमन्महाप्रभु ने अपने प्रयोजन को स्पष्ट कर दिया है। इन परम मूल्यवान प्रार्थनाओं का यहाँ मूलरूप एवं अनुवाद प्रस्तुत किया जा रहा है।

चेतोदर्पणमार्जनं भव-महादावाग्नि-निर्वापणम्
श्रेयःकैरवचन्द्रिकावितरणं विद्यावधू-जीवनम्।
आनंदाम्बुधिवर्धनं प्रतिपदं पूर्णामृतास्वादनम्
सर्वात्मस्नपनं परं विजयते श्रीकृष्ण-संकीर्तनम् ॥१॥

अनुवाद: श्रीकृष्ण-संकीर्तन की परम विजय हो जो हृदय में वर्षों से संचित मल का मार्जन करने वाला तथा बारम्बार जन्म-मृत्यु रूपी दावानल को शांत करने वाला है। यह संकीर्तन यज्ञ मानवता के लिए परम कल्याणकारी है क्योंकि चन्द्र-किरणों की तरह शीतलता प्रदान करता है। समस्त अप्राकृत विद्या रूपी वधु का यही जीवन है। यह आनंद के सागर की वृद्धि करने वाला है और नित्य अमृत का आस्वादन कराने वाला है ॥१॥

नाम्नामकारि बहुधा निज सर्व शक्तिस्तत्रार्पिता नियमितः स्मरणे न कालः।
एतादृशी तव कृपा भगवन्ममापि दुर्दैवमीदृशमिहाजनि नानुरागः॥२॥

अनुवाद: हे भगवन ! आपका मात्र नाम ही जीवों का सब प्रकार से मंगल करने वाला है-कृष्ण, गोविन्द जैसे आपके लाखों नाम हैं। आपने इन नामों में अपनी समस्त अप्राकृत शक्तियां अर्पित कर दी हैं। इन नामों का स्मरण एवं कीर्तन करने में देश-काल आदि का कोई भी नियम नहीं है। प्रभु ! आपने अपनी कृपा के कारण हमें भगवन्नाम के द्वारा अत्यंत ही सरलता से भगवत-प्राप्ति कर लेने में समर्थ बना दिया है, किन्तु मैं इतना दुर्भाग्यशाली हूँ कि आपके नाम में अब भी मेरा अनुराग उत्पन्न नहीं हो पाया है ॥२॥

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना।
अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः ॥३॥

अनुवाद: स्वयं को मार्ग में पड़े हुए तृण से भी अधिक नीच मानकर, वृक्ष के समान सहनशील होकर, मिथ्या मान की कामना न करके दुसरो को सदैव मान देकर हमें सदा ही श्री हरिनाम कीर्तन विनम्र भाव से करना चाहिए ॥३॥

न धनं न जनं न सुन्दरीं कवितां वा जगदीश कामये।
मम जन्मनि जन्मनीश्वरे भवताद् भक्तिरहैतुकी त्वयि॥४॥

अनुवाद: हे सर्व समर्थ जगदीश ! मुझे धन एकत्र करने की कोई कामना नहीं है, न मैं अनुयायियों, सुन्दर स्त्री अथवा प्रशंनीय काव्यों का इक्छुक नहीं हूँ । मेरी तो एकमात्र यही कामना है कि जन्म-जन्मान्तर मैं आपकी अहैतुकी भक्ति कर सकूँ ॥४॥

अयि नन्दतनुज किंकरं पतितं मां विषमे भवाम्बुधौ।
कृपया तव पादपंकज-स्थितधूलिसदृशं विचिन्तय॥५॥

अनुवाद: हे नन्दतनुज ! मैं आपका नित्य दास हूँ किन्तु किसी कारणवश मैं जन्म-मृत्यु रूपी इस सागर में गिर पड़ा हूँ । कृपया मुझे अपने चरणकमलों की धूलि बनाकर मुझे इस विषम मृत्युसागर से मुक्त करिये ॥५॥

नयनं गलदश्रुधारया वदनं गदगदरुद्धया गिरा।
पुलकैर्निचितं वपुः कदा तव नाम-ग्रहणे भविष्यति॥६॥

अनुवाद: हे प्रभु ! आपका नाम कीर्तन करते हुए कब मेरे नेत्रों से अश्रुओं की धारा बहेगी, कब आपका नामोच्चारण मात्र से ही मेरा कंठ गद्गद होकर अवरुद्ध हो जायेगा और मेरा शरीर रोमांचित हो उठेगा ॥६॥

युगायितं निमेषेण चक्षुषा प्रावृषायितम्।
शून्यायितं जगत् सर्वं गोविन्द विरहेण मे॥७॥

अनुवाद: हे गोविन्द ! आपके विरह में मुझे एक क्षण भी एक युग के बराबर प्रतीत हो रहा है । नेत्रों से मूसलाधार वर्षा के समान निरंतर अश्रु-प्रवाह हो रहा है तथा समस्त जगत एक शून्य के समान दिख रहा है ॥७॥

आश्लिष्य वा पादरतां पिनष्टु मामदर्शनान्-मर्महतां करोतु वा।
यथा तथा वा विदधातु लम्पटो मत्प्राणनाथस्-तु स एव नापरः॥८॥

अनुवाद: एकमात्र श्रीकृष्ण के अतिरिक्त मेरे कोई प्राणनाथ हैं ही नहीं और वे ही सदैव बने रहेंगे, चाहे वे मेरा आलिंगन करें अथवा दर्शन न देकर मुझे आहत करें। वे नटखट कुछ भी क्यों न करें -वे सभी कुछ करने के लिए स्वतंत्र हैं क्योंकि वे मेरे नित्य आराध्य प्राणनाथ हैं ॥८॥

संकलन- श्री मानिक चंद्र पाल
स्रोत –अंतर्राष्ट्रीय कृष्ण भावनामृत्त संघ
पिता श्रीमती नमिता रानी पाल मित्र
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

लॉकडाउन के बाद की एक भ्रमनकथा

हाथों से अखवार को रखते हुए अमित ने कहाँ कोरोना का प्रतिषेधक मार्च के महीने से बाज़ार में मिलने लगेगा, बस अव तो घुमने जाने की परिकल्पना करनी पड़ेगी। बवलु और जूँही एकसाथ चीखकर पापा के इस प्रस्ताव में आपसी समर्थन जताया। बबलु ने अपना प्रस्ताव भी रखा इस बार हम सब कश्मीर चलते है, कश्मीर में बर्फवारी शुरु हो गई हैं। बर्फ में गोलें खेलने में बहुत मजाँ आएगा। इस प्रस्ताव से जूँही पुरी तरह सहमत होते नहीं दिखी। उसके प्यारे से चेहेरें को उतरते हुएँ देखकर अमित ने जूँही को गोद में लेते हुए बोले- "बेटी जुँही, तुम कश्मीर की प्यारी वादियां नहीं देखना चाहोगी?" जूँही ने कहा- "नहीं, मुझें जंगल देखना है।" रसोई से आते - आते सुनीता अपने परिवार की बातें सुन रही थी। अमित को दुविधा मे देखकर उसने कहां -अरे बच्चों! कोरोना अभी चला नहीं गया है और जबतक प्रतिषेधक ना ले तबतक लापरवाही नहीं बरत सकते हैं। बवलु ने कहाँ –"लेकिन मां, तबतक तो हमारे कक्षाएँ भी शुरु हो जायेंगी और छुट्टीयां भी नहीं मिलेगी।" जूँही भी अपने भाई को समर्थन करती हुई बोली "हां माँ, और मेरी सहेली ईषिता भी तो अभी- अभी असम और मेघालय घुम आए।" अमित बोले- "बच्चे लॉकडाउन में घर बैठे-बैठे और ऑनलाइन क्लास कर करके बोर हो गए हैं, घुमके आएंगे तो इनका मन भी बहल जाएगा।" बच्चें एकजुट हो कर बोल उठे – "हां, माँ प्लीज़ मान जाओ ना।" सुनीता अब मान गयी और बच्चें फिर से एकबार चीख कर अपने खुशी ज़ाहिर करने लगे।

अब यह तो तय था कि घुमने जाना है, पर असमन्जस इस बात की थी कि जाए तो जाए कहाँ? बवलु को जाना था कश्मीर लेकिन पता चला के पर्यटकों की भीड़ से कही होटल नहीं मिल रही है। बर्फवारी से सोनमार्ग का रास्ता भी बंद है पता चला। जूँही की पसंदीदा जंगल भी आसपास कही नज़र नहीं आयी अमित को। तब सुनीता ने सुझाव दिया कि- "क्यूंना हम भी असम और मेघालय की सैर कर ले। असम में काजिरंगा जातीय उद्यान जूँही को काफी पसंद आएगा और मेघालय की खासि-गारो-जय़ंतिया जैसें पहाड़ भी है जिनकी वादियाँ कश्मीर जैसी मशहुर शायद ना हो पर उतनी ही खुवसूरत है।" अमित को यह प्रस्ताव सठीक लगा। पुछताछ से पता लगा की असम और मेघालय पर्यटकों के लिए खोल दिया गया है। वच्चे भी थोड़ा सा मनाने के वाद मान गए। इंटरनेट से अगले ही दिन सारी टिकटे भी अमित ने करा लिया। देखतें ही देखतें जाने का शुभदिन भी आ गया।

बच्चें पहले कभी उत्तर-पूर्व की कोई जगह नहीं देखें थे। आसमान से ब्रह्मपुत्र की चौराई और विशाल अववाहिका को देख बच्चें एक ही साथ हैरान और खुश हो गए। आने से पहले अमित ने बच्चो को उत्तर-पूर्व के सारे राज्यों का नाम सिखाये थे। देखा गया आतें - आतें बच्चें कुछ नाम भुल चुकें थे। लेकिन अमित ने सोचा की यह सफर शिक्षामूलक होनी तो चाहिए लेकिन यह शिक्षा आरोपित नहीं होनी चाहिए।

गुवाहाटी के हवाईअड्डे मे उतरके बच्चें काफी खुश हुए असमिया हस्तशिल्प के निदर्शनों को देखकर। लेकिन चिखते- चिल्लाते हुए लोगों से असमिया भाषा सुनकर वे कुछ भी समझ नहीं पाए। वुकिंग की गई टैक्सी ले कर अमित और परिवार होटल

मे पहुचे। पाँच दिनों कि सफर सूची के अनुसार पहली शाम सुनीता और परिवार गुवाहाटी में ही घुमें। ब्रह्मपुत्र के उपर आलफ्रेंसको लंच की अनोखी सफर सभीको बहुत पसंद आयी। अगले दिन वे लोग असम राज्य चिड़ियाघर, असम राज्य संग्रहशाला, दीपोर बिल, कामाख्या मंदिर, उमानंद आदि दर्शनीय जगह देखें। तीसरे दिन

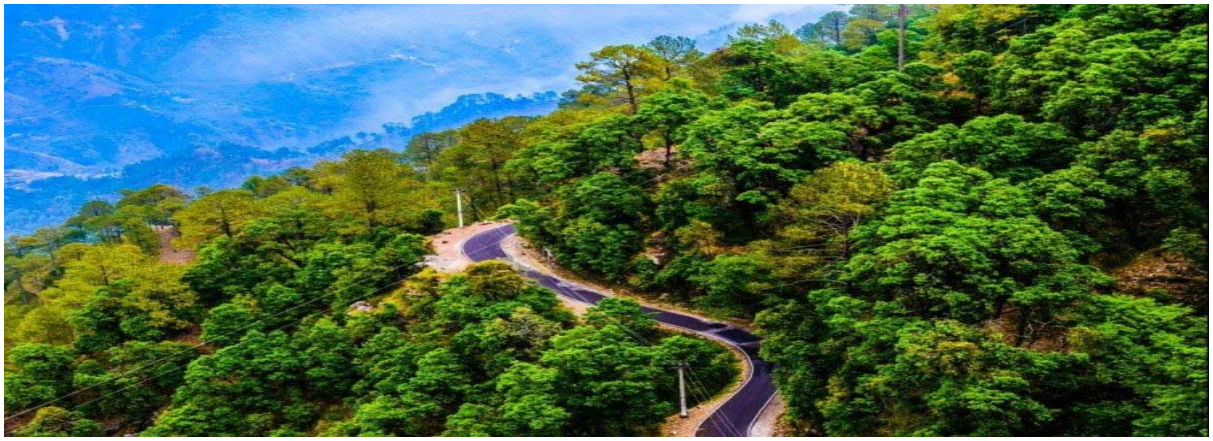

सबलोग होटल छोड़कर काजिरंगा के लिए निकले। जंगल सफारी के दौरान जूँही ने काफी जानवर देखें और खुशी से फुली नहीं समा रही थी। अगले दिन काजिरंगा से सबलोग मेघालय की मुख्य शहर शिलांग की तरफ निकलें।

शिलांग पहुंचने से पहले उमियम लेक के नज़दिक अमित की गाड़ी रुकी। सबलोग ब्रीज पर तस्वीरें खींचने लगें। आर्किड लेक रिसोर्ट में खाना खाकर सबलोग नेहरु पार्क में टेहले। बच्चे लेक के ठंडे पानी को छुकर मज़े करने लगें। शिलांग पहुंच कर पुलिस बाज़ार के होटल में चेक-इन करके अमित ने कहाँ- "देखा, शिलांग में गुवाहाटी से कितनी ज्यादा ठंड है, यह पाहाड़ियों में ज़्यादा ऊपर होने की वजह से होता है।" अगले दिन सबलोग चेरापुंजी की सैर करने निकले। नोक्कालिकाइ, सेवन सिस्टर्स, कावा, मौसमाइ, एलिफैंट आदि झरनों को देखकर, आरबाह, मौसमाइ आदि गुफाय़ों मे घुमकर सबको वहुत मजा आया। अगले दिन डाउकी और मौलिननांग की सफ़र करके भी सबको वहुत अच्छा लगा।

देखतें ही देखतें घर लौटने की घड़ी आ गई। गुवाहाटी एयरपोर्ट में रिटर्न फ्लाइट में बैठकर बच्चों का मन दुखीं होने लगा। जिनकी भाषा भी समझ में नहीं आयी उनकी हँसी को याद करके बच्चों की आखें नम हो गई। घर पहुँचने के बाद बच्चों ने अपने दोस्तों को पूरे डिटेल में अपनी भ्रमनकथा सुनाई। अमित ने सुनीता से कहाँ कि अपने से अलग संस्कृति के लिए सहनशीलता एक ऐसी सीख है जो आज के समाज को सबसे ज्यादा ज़रुरी है। लगता है की बच्चों ने इस सैर से यह शिक्षा भरपुर पाई है। दोनों एक दुसरे के तरफ देख के मुस्कुरानें लगे।

श्री अंजन देबनाथ
वैज्ञा. /अभि. 'एसई'

सतर्क भारत, समृद्ध भारत

सावधान तुम, सजग बनो तुम,
जग प्रहरी तुम, सतर्क बनो तुम।
समृद्धि देश की तभी है संभव,
जन-जन में सतर्कता, होगी जब उद्भव। (स्वरचित)

सतर्कता –

हिंदी में सतर्कता का क्या अर्थ है?

हिंदी शब्दकोशानुसार सतर्कता संज्ञा स्त्री0 [सं0]– सतर्क होने का भाव, सावधानी, होशियारी, चौकसी है।

उद्देश्य-

सतर्कता जागरूकता का मुख्य उद्देश्य नागरिकों में भ्रष्टाचार के प्रभाव के संबंध में जागरूकता फैलाना है।

भारत में सतर्कता जागरूकता सप्ताह प्रत्येक वर्ष आयोजित की जाती है। वर्ष 2020 में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 27 अक्टूबर से 02 नवंबर तक – 'सतर्क भारत, समृद्ध भारत' विषय के साथ मनाया जा रहा है। भारत सरकार के नवभारत निर्माण के दृष्टिकोण के अनुरूप देश के अग्रणी सत्यनिष्ठ संस्थान केंद्रीय सतर्कता आयोग का यह प्रयास है कि लोगों के बीच सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता और जवाबदेही को प्रोत्साहित किया जाए।

भारत के जन-जन में सतर्कता का भाव जागृत होना अत्यंत आवश्यक है। सबसे पहले हमें यह समझना आवश्यक है कि हमें सतर्क किसके प्रति रहना है। भ्रष्टाचार, बेईमानी, अनैतिक आचरण आदि प्रमुख बातें है जिनके प्रति हमें सतर्क और सजग रहना है। भ्रष्टाचार को किसी ऐसे व्यक्ति, जिसे प्राधिकार दिया गया है, द्वारा किए जाने वाले बेईमानी और अनैतिक आचरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसे वह स्वयं को या दूसरों को लाभ पहुँचाने के लिए करता है। आज यह वैश्विक रूप में समाज के हर तबके में किसी न किसी रूप में व्याप्त है। भ्रष्टाचार से राजनीतिक विकास, लोकतंत्र, आर्थिक विकास, वातावरण, लोगों के स्वास्थ्य तथा अन्य कई चीज़ों पर प्रभाव पड़ता है। अतः यह आवश्यक है कि लोगों को जागरूक किया जाए और उन्हें भ्रष्टाचार मिटाने के प्रयास हेतु प्रेरित भी किया जाएं। (बैंक ऑफ बड़ौदा-वैबसाइट)

भ्रष्टाचार को मिटाने के लिए सतर्कता बहुत आवश्यक है। वर्तमान में सतर्कता को अपने जीवन में डालना अत्यंत आवश्यक है। सतर्कता के प्रति जागरूकता जितनी बढ़ेगी उतने ही स्तर पर हम भ्रष्टाचार को दूर करने में सफल हो सकेंगे। जीवन का कोई भी क्षेत्र इसके प्रभाव से मुक्त नहीं है। उदाहरण स्वरूप – आईपीएल में खिलाड़ियों की स्पॉट फिक्सिंग, नौकरियों में अच्छी , बेहतर पद की लालसा में लोग रिश्वत देने में भी नहीं चूकते हैं, स्कूलें व कॉलेजों में भी आजकल योग्यता नहीं वरन पैसों के बल पे ही भर्ती कराई जाने लगी है। आज भारत का हर तबका इस बिमारी से ग्रसित है।

भ्रष्टाचार को रोकने का उपाय-

भ्रष्टाचार रोकने का एकमात्र उपाय सतर्कता, जागरूकता और अपने कर्तव्यों का बोध होना है। बिना किसी निजी स्वार्थ्य के जब प्रत्येक भारतवासी अपने कर्तव्यों का निर्वाह करेगा तथा अपने अधिकारों के साथ अपने कर्तव्यों के प्रति भी सजग रहेगा तभी भारत समृद्ध हो सकता है। भ्रष्टाचार को रोकने के कुछ उपाय- ई गवर्नेन्स, प्रक्रिया में व्यवस्थापरक बदलाव, कम स्वतंत्रता, सार्वजनिक इंटर्फेज़ में कमी, तकनीकी आधारित खरीद और ऑटोमेशन भ्रष्टाचार में कमी लाने के लिए दूरगामी प्रभाव सावित होंगे।

प्रत्येक नागरिकों के स्वयं अपने प्रति, परिवार के प्रति, पड़ोसी व समाज के प्रति भी कर्तव्य होते हैं। भारत के संविधान में अधिकार के साथ कर्तव्यों का भी उल्लेख किया गया है। ये मूल कर्तव्य इस प्रकार है-

1. संविधान का पालन करना
2. आदर्शों का पालन करना
3. देश की अखंडता एवं एकता बनाए रखना
4. देश की रक्षा करना
5. समरसता एवं समान भातृत्व भावना
6. गौरवशाली परंपरा का परीक्षण
7. पर्यावरण की रक्षा करना
8. वैज्ञनिक दृष्टिकोण
9. सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करना
10. सामूहिक गतिविधियों को बढ़ावा देना
11. बच्चों को शिक्षा के अवसर देना

साथ ही कुछ अन्य कर्तव्य भी है। जिनमें प्रमुख है-

सार्वजनिक पद पर नियुक्त होने पर सेवाभाव से अपने कर्तव्यों का पालन करें। बिना किसी पक्षपात के राष्ट्रहित में काम करें।

उपसंहार-

'सतर्क भारत' शब्द स्वतः ही स्पष्ट है। सतर्कता मात्र एक संस्था या सरकार की ज़िम्मेदारी नहीं है वरन संपूर्ण भारतवासियों को सतर्क रहने की आवश्यकता है। जब निचले स्तर पर सभी आम जनता अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों के प्रति भी जागरूक होगा तभी संपूर्ण भारत समृद्ध हो सकता है। हर क्षेत्र चाहे वह खेल, राजनीति, व्यापार, वाणिज्य, फिल्म जगत, शिक्षा हो हर क्षेत्र में सतर्कता और पारदर्शिता होना आवश्यक है। सरकार ने सन् 1964 में सतर्कता आयोग का गठन किया था। इस आयोग का गठन भ्रष्टाचार रोकने से संबंधित सुझाव देने के लिए किया गया था। केंद्रीय सतर्कता आयोग किसी भी कार्यकारी प्राधिकारी के नियंत्रण से मुक्त है तथा केंद्रीय सरकार के अंतर्गत सभी सतर्कता गतिविधियों की निगरानी करता है।

समय धीरे-धीरे परिवर्तित हो रहा है। सभी भारतवासी अब सतर्क होते जा रहे हैं। इसमें सरकार की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जैसा कि माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा है कि 'अब डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी)

के माध्यम से गरीबों को मिलने वाला लाभ 100 प्रतिशत गरीबो तक सीधे पहुंच रहा है। अकेले डीबीटी की वजह से 1 लाख 70 हज़ार करोड़ रूपए से ज्यादा गलत हाथों में जाने से बच रहे हैं। आज ये गर्व के साथ कहा जा सकता है कि घोटाले वाले उस दौड़ को देश पीछे छोड़ चुका है।'

अतः यह सरकार के साथ ही साथ प्रत्येक आम जन का भी कर्तव्य है कि वे अपने दैनिक हर कार्य में सतर्कता बरते, जितना अधिक देश सतर्क होगा उतना ही और अधिक समृद्ध बनता जाएगा। सतर्कता समाज की स्वच्छता के प्रति भी उतनी ही आवश्यक है जितनी खुद के प्रति। स्वच्छता सभ्यता और सुसंस्कृत होने की प्रथम एवं अनिवार्य शर्त है। सतर्कता स्वच्छता के प्रति भी होना अनिवार्य है। जो परिवार से प्रारंभ होता है। देश के इस महाअभियान में जाति, धर्म, संप्रदाय से ऊपर उठकर सभी को एकजुट होकर प्रयास करना चाहिए। जन- जन सतर्क होने से ही देश और अधिक समृद्द बन पाएगा।

सावधान इक प्रहरी बनकर, सजग समाज बनाने से
प्रगति देश की हो सकती है जन सतर्क हो जाने से।
(अज्ञात कवि)

संदर्भ-

1. केंद्रीय सतर्कता आयोग विभाग (वैबसाइट)
2. 'सतर्क भारत, समृद्ध भारत' पर माननीय प्रधानमंत्री जी का भाषण।

श्रीमती नमिता रानी पाल मित्र
क.हिं अनुवादक, एन.ई-सैक

पूर्वोत्तर भारत के अद्वितीय वन और वन संरक्षण एवं प्रबंधन में एनईसैक की भूमिका

भारत के उत्तर पूर्वी राज्य में 8 राज्य शामिल है यथा- अरूणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोराम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा, विश्व के 17 जैव विविधता वाले हॉटस्पॉट में से एक है। इस क्षेत्र में देश के वन क्षेत्र का लगभग 25 प्रतिशत हिस्सा है। भारत का पूर्वोत्तर भाग, अपने विविध और सबसे व्यापक हरे –भरे जंगल के लिए जाना जाता है। इस क्षेत्र के वन अद्वितीय संरचनात्मक और प्रजातियों की संरचना है। पूर्वोत्तर भारत की जलवायु, भौतिक विज्ञान और मिट्टी ने प्राकृतिक वनस्पतियों के फलप्रद विकास के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान की है। भारत का पूर्वोत्तर क्षेत्र खेती योग्य मैदानों से लेकर घास के मैदान, चारागाह, दलदल, जलमग्न, झाड़-झंखाड़, ऊष्ण कटिबंधीय वन, समशीतोष्ण वनों, और अल्पाइन वनस्पतियों तक लगभग सभी प्रकार की वनस्पतियों का समर्थन करता है। विविध स्रोतों से एकत्र किए गए आंकड़े पूर्वोत्तर क्षेत्र के अद्वितीय वन और जैव विविधता पर ज़ोर देते हैं। आदिम फूलों के पौधे जैसे- मैगनोलिया पियालियाना, एम. क्वास्तावी, माइरिका एस्कुलेंटा; मांसाहारी पौधे जैसे- नेपेंथस खसियाना लिलियम मैकेलिनिया, वन्य जीवों और वनस्पतियों की लुप्तप्राय प्रजातियों में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की परंपरा में सूचीबद्ध है। इस क्षेत्र में साइट्रस, केला, आम और चावल के कुछ महत्वपूर्ण जीन पुल उत्पन्न हुए। इंडो म्यानमार सीमा क्षेत्र में पाए जानेवाले उष्ण कटिबंधीय जंगलों में डिप्टेरोकॉर्पस मैक्रॉफिलस, डी. टर्बिनेटस, क्वेरकस spp. शिमा वालिचि; मैगनोलिया कैंपबेली आदि का प्रभुत्व है। 'इंडिया स्टेट ऑफ फॉरेस्ट रिपोर्ट' पूर्वोत्तर क्षेत्र में कुल 170,541 वर्ग किलोमाटर वन आवृत्त दर्शाता है, जो कि इसके भौगोलिक क्षेत्र का 65.05 प्रतिशत है। वनों की कटाई और क्षरण के कारण क्षेत्र लगातार खतरों का सामना कर रहा है।

उत्तर पूर्वी अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (एनईसैक) अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी की मदद से वन संरक्षण और प्रबंधन की ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। सुदूर संवेदन की मदद से वन प्रकार और वन घनत्व मानचित्र तैयार किए जाते हैं जो वन प्रबंधन उद्देश्य के लिए मूल इनपुट होते हैं। वन परिवर्तन विश्लेषण वन हानि की मात्रा की पहचान करने और वन परिवर्तन के कारणों को समझने में मदद करता हैं। एनईसैक दवानल और दग्ध क्षेत्र के आकलन जैसी आपदाओं के क्षेत्र में काम कर रहा है। एनईसैक ने संरक्षित क्षेत्र के प्रबंधन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है। माइक्रोवेव सुदूर संवेदन और ड्रॉन तकनीक जैसी उन्नत प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग बादल की स्थिति और बहुत उच्च विभेदन डेटा में जानकारी प्राप्त करने में मदद कर रहे हैं। एनईसैक क्षमता निर्माण और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के व्यापक उपयोग के लिए अल्पावधि पाठ्यक्रम भी आयोजित कर रहा है। एनईसैक प्रमुख रूप से राज्य वन विभागों और राज्य सुदूर संवेदन केंद्रों के विभिन्न हितधारकों के साथ मिलकर काम कर रहा है। इस तरह के प्रयासों के माध्यम से एनईसैक उत्तर पूर्वी क्षेत्र में वन प्रबंधन में सहायता प्रदान कर रहा है ताकि अंतरिक्ष प्रोद्योगिकी को निचले स्तर के लोगों तक भी ले जाया जा सकें।

डॉ.कस्तुरी चक्रवर्ती

वैज्ञा. /अभि. 'एसएफ'

डॉ. रॉकी पेबम

वैज्ञा. /अभि. 'एसई'

श्रीमती एच.सुचित्रा देवी

वैज्ञा. /अभि. 'एसएफ'

डॉ.के.के.शर्मा

वैज्ञा. /अभि. 'एसजि'

अथक परिश्रम का पथ धर लो

जतन करो तुम, करो प्रयास
मन में अपने जगाओं विश्वास।
असफलता से हारों ना तुम,
अपनी क्षमता पहचानों तुम।

कोई तुम्हें पराजित कर नहीं सकता,
मेहनत का फल हरदम है मिलता।

कहा हर कोई विजयी हुआ है,
अपनी हार से सीखों बस तुम।
तभी जीवन पथ में बढ़ पाओगें,
राह की बाधाओं को हर पाओगें।

असंभव तभी संभव होता है,
जब मानव प्रयत्नरत रहता है।

थको न तुम, रूको न तुम
सबकुछ करने में सक्षम हो तुम,
बस मन में अटल प्रतिज्ञा कर लों
अथक परिश्रम का पथ धर लों।

****

श्रीमती नमिता रानी पाल मित्र
क.हिं.अनुवादक

निदेशक, एनईसैक को आईएसआरएस द्वारा प्रतिष्ठित सतीश धवन पुरस्कार से सम्मानित किया गया

श्री पी.□□.□□.□□□,□ □□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ रिमोट सैंसिंग (□□□□□□□□□) द्वारा वर्ष 2019 के लिए प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन, □□□□ □□□□□ □□□, □□□-शिक्षा, अंतरिक्ष विज्ञान और मौसम विज्ञान, शिक्षा, प्रशिक्षण, दुरस्थ शिक्षा और आउटरीच आदि साथ ही साथ पूर्वोत्तर में यूएवी का उपयोग करने के लिए अंतरि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों को बढ़ावा देने में उनके अग्रणी और महत्वपूर्ण आजीवन योगदान को मान्यता देते हुए प्रतिष्ठित सतीश धवन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

यह पुरस्कार ISRS-ISG राष्ट्रीय संगोष्ठी और वार्षिक सम्मेलन के दौरान ISRS-□□□□□□□□ चैप्टर और ISG अहमदाबाद चैप्टर द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया और 18 □□□19 दिसंबर 2020 □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ / वर्चुएल प्लेटफॉर्म के माध्यम से अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र, □□□□, अहमदाबाद द्वारा आयोजित किया गया था।

आईएसजी शिलांग चैप्टर को सर्वश्रेष्ठ चैप्टर ऑवार्ड मिला

इंडियन सोसायटी ऑफ जियोमैटिक्स (आ□□□□□)- शिलांग चैप्टर को वर्ष 2019 के लिए सर्वश्रेष्ठ चैप्टर ऑवार्ड से सम्मानित किया गया है और यह पुरस्कार ISRS-ISG राष्ट्रीय संगोष्ठी और वार्षिक सम्मेलन के दौरान 18 □□ 19 दिसंबर 2020 □□ □□□□□□ / वर्चुएल प्लेटफॉर्म के माध्यम से अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र, ईस□□, अहमदाबाद में आयोजित किया गया था।

वर्ष 2019 □□□□□□, आईएसजी शिलांग चैप्टर ने 4 प्रमुख विषयों पर पूर्व संगोष्ठी ट्यूटोरियल के □□□ □□□□□, शिलांग में आईएसजी और आईएसआरएस के एनईआर और वार्षिक सम्मेलनों पर □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □स्थानिक प्रौद्योगिकी में नवाचारों पर राष्ट्रीय संगोष्टी का आयोजन किया। संगोष्ठी में 350 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसके अलावा, आ□□□□□-शिलांग चैप्टर अर्थात विक्रम साराभाई जन्म शताब्दी समारोह, राष्ट्रीय सुदूर संवेदन दिवस आदि के दौरान लोकप्रिय व्याख्यान द्वारा कई कार्यक्रम और अन्य सामाजिक गतिविधियाँ आयोजित की गई।

आईएसजी शिलांग चैप्टर के अध्यक्ष, श्री पी.□□.□□.□□□,□ □□. □□.□□हैंडिक, □चिव और श्री चंदन गोस्वामी, कोषाध्यक्ष, □□ □□□□□□-शिलांग चैप्टर की ओर से पुरस्कार प्राप्त हुआ।

आन्तरिक संघर्ष

आकांक्षाओं के अनंत पटल का,
मानव मस्तिष्क के कर्म क्षेत्र से
संघर्ष बना यह रहता है।
हर वक्त हृदय दुःख सहता है

ख्वाहिश सतरंग सितारो की
विश्वास से आंकी जाती है।
जब वक्त हो इक पल बढ़ने का,
नियत संघर्ष जगाती है।
संघर्ष वो सब कुछ करने का,
जो करके पाना है सबकुछ।
या छोड़ के सबकुछ रहने दे,
जो होगा देखा जायेगा।
ख्वाहिश और क्षणिक विलास के मध्य,
संघर्ष बना यह रहता है।
हर वक्त हृदय दुःख सहता है।

कल से बहतर कल होने का,
संकल्प लिया कल होता है।
जब आज सवेरा होता है,
संघर्ष वही पर ठहरा है।
एक क्षण की ध्वनि वो धीमी सी,
व्याकुल मन अवश्य सुनाता है।
पर मन तो ठहरा चंचल सा,
सुन कर भी कहा सुन पता है।
ख्वाहिश और क्षणिक विलास के मध्य,
संघर्ष बना यह रहता है।
हर वक़्त हृदय दुःख सहता है – 2

सम्पूर्ण विकास की संरचना,
एक पल की नहीं कहानी है ।
यह प्रमाण है उसके संघर्ष का,
करने की जिसने कुछ ठानी है।
हम जो है अब
क्या कल होंगे,
संघर्ष हमे वो दिखता है,
गर जान के भी हम दे मुकर,
गंतव्य कहा मिल पता है।
आकांशाओ के अनंत पटल का
मानव मस्तिष्क के कर्म क्षेत्र से,
संघर्ष बना यह रहता है।
हर वक़्त हृदय दुःख सहता है।
संघर्ष बना यह रहता है,
हर वक़्त हृदय दुःख सहता है।

*****

श्री हर्षवर्धन सोनी
सहायक

कविता सुमन

निज भाषा, निज पहचान है।
देश का सम्मान है,
हिंदी सहज- सरल है भाषा,
सीखे सभी बस यही है आशा।
हिंदी की जय जयकार हो,
हिंदी का ही प्रकाश हो
चहुँ ओर जो गुंजे पल पल
ऐसा उसका राज हो।

प्रयास

गर पाना है कुछ विशेष,
तो करने होंगे प्रयास अशेष।
सहजता से कुछ भी नहीं मिलता,
पथ से पत्थड़ यूँ ही नहीं हिलता।
तो मन में दृढ़ संकल्प ये करलों
मेहनत का बस पग तुम धरलों,
बिना प्रयास के कुछ हो ना पाएगा,
अंधेरे में साया भी साथ न आएगा।।

उलझन

क्या करें कुछ समझ ना आए,
क्षण -क्षण प्रतिपल मन घबराए।
जाने कैसे हम मंज़िल पाए,
उलझी राहो को सुलझाए।

पल

कुछ सिखाता है,
कुछ बताता है,
जिने का मतलब भी समझाता है।
पल ही तो वह साथी है, जो..
हर पल में साथ निभाता है।
अच्छा बुरा जो भी क्षण हो,
आता हैं, आके चला जाता है।
पर हर पल जो रह जाए साथ,
वही सच्चा साथी कहलाता है।

श्रीमती नमिता रानी पाल मित्र
क.हि.अनुवादक

वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी एवं तकनीकों के सहयोग से हिंदी का विकास

रूपरेखा

- प्रस्तावना
- हिंदी भाषा का तकनीकी रूप से विकास का प्रारंभिक चरण
- सूचना प्रौद्योगिकी क्रांति
- हिंदी का तकनीकी विकास
    1. टाइपराइटर/टेलीप्रिंटर
    2. फैक्स
    3. कम्यूटर तथा अन्य उपकरण
- आधुनिक युग में तकनीक के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रयोग
    1. मानकीकरण के प्रयास
    2. पारिभाषिक शब्दावली का विकास
    3. अनुवाद कार्य की प्रगति
    4. हिंदी के टंकण आदि से जुड़ी तकनीकों का विकास
- उपसंहार

प्रस्तावना:- वर्तमान समय सूचना प्रौद्योगिकी का समय है एवं वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी क्षेत्र से जुड़ा हो किसी रूप से तकनीक एवं प्रौद्योगिकी से अवश्य जुड़ा हुआ है, उदाहरण के तौर पर मोबाइल फोन, एटीएम, इंटरनेट बैंकिंग, रेलवे आरक्षण, तथा ऑनलाइन खरीदारी।

सूचना एवं प्रौद्योगिकी पूर्णरूप से कम्प्यूटर पर आधारित है। एक विकसित राष्ट्र के निर्माण कम्प्यूटर की विशेष भूमिका है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी के द्वारा हम किसी भी व्यक्ति से चाहे वह कितनी भी दूर क्यों न हो संचार स्थापित कर सकते हैं। आदर्श संचार माध्यम के रूप में सूचना प्रौद्योगिकी की महत्वपूर्ण भूमिका है। उपयुक्त संचार के लिए संचार माध्यम की एक अहम भूमिका है। तथा भाषा का एक विशेष महत्व है। भारत जैसे राष्ट्र जिसने हिंदी को राजभाषा के रूप में अपनाया है, एक विविधता वाला देश है जहाँ पर क्षेत्र भाषाई आधार पर प्रान्तो (राज्यों) के रूप में बटे हुए हैं। परन्तु अनेक भाषाई प्रान्तो के रूप में बटें होने के बावजूद राष्ट्र मे एकता व अखण्डता कायम है। इस एकता को बनाये रखने में हिंदी भाषा का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी युग में हिंदी भाषा का प्रयोग हर प्रान्तो में सुलभ हो चुका है। तथा केंद्रीय सरकार ने हिंदी भाषा को जन-जन की भाषा के रूप में विकसित करने के लिए गृह मंत्रालय के अंतर्गत एक अलग राजभाषा विभाग की स्थापना की है। वर्तमान में हिंदी भाषा के विकास के लिए अनेक संगठन कार्य कर रहे हैं। वर्तमान में हिंदी भाषा के विकास के लिए अनेक संगठन कार्य कर रहे हैं। जिसमें प्रमुख संगठन हैं-

1. राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय), 2. केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान

इसके साथ ही अनेक सरकारी व गैर सरकारी संगठन हैं जो हिंदी भाषा के विकास के लिए कार्यरत व प्रयासरत हैं।

भारतीय संविधान के अनुसार हिंदी भारत की राजभाषा, हिंदी भाषा-भाषी राज्यों की राज्यभाषा और केंद्र तथा हिंदी-अहिंदी राज्यों के मध्य संपर्क भाषा (संचार भाषा) के रूप में तो मान्य है ही अब वह धीरे-धीरे विश्व भाषा के रूप में भी विकसित हो रही है। भारत देश के बहुत बड़े उपभोक्ता बाजार के रूप में होने के कारण विदेशी कंपनियाँ भी भारतीय उपभोक्ताओं के समझ की भाषा हिंदी का बखूबी प्रयोग कर रही हैं।

हिंदी भाषा का तकनीकी रूप से विकास का प्रारम्भिक चरण-

विंडोज 2000 के रिलीज के बाद यह महसूस किया जाने लगा था कि भारतीय भाषाओं को यदि परिचलन प्राणाली में अंर्तनिहित नहीं किया गया तो उसमें अनेक कमियाँ रह जायेंगी। उदाहरण के लिए कोश निर्माण के लिए भारतीय भाषाओं की वर्णमाला के अनुरूप सॉर्टिंग की सुविधा अत्यन्त आवश्यक है और यह सुविधा आज मूल प्राणाली में हिंदी को अंर्तनिहित करने के कारण अनायास ही सुलभ हो गयी है, इसलिए यह कदम भारतीय भाषाओं में कम्प्यूटिंग के क्षेत्र में अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। विण्डोज आपरेटिंग सिस्टम के बाद अब 'लोटस', 'लाइनेक्स', एवं 'ओरेकल' कम्पनियों ने भी अपनी परिचालन प्रणाली में हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं को समाहित कर लेंगी।

सूचना प्रौद्योगिकी क्रान्ति- वर्तमान युग में अचानक सूचना प्रौद्योगिकी क्रान्ति समाहित हो गयी। उपग्रह के माध्यम से संचार प्राणालियों में आमूलचूल परिवर्तन हो गया। प्रतिदिन काम में आने वाली जानकारियों से लेकर गहन से गहन अध्ययन, व्यापार जगत, सरकारी कार्यालयों से संबंधित फाईलों में सर्वत्र इस प्रौद्योगिकी का सहज प्रवेश हो गया। इंटरनेट एक ऐसा माध्यम बन गया है जिसने भौगोलिक दूरियों को कम कर दिया है। व्यापार का नया स्वरूप ई-कामर्स के नाम से प्रकट हुआ है।

सूचना प्रौद्योगिकी अपने छोटे नाम 'आई.टी.' (इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी) से अधिक जानी जाती है। भारत सरकार ने आई. आई. आई.टी. (भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान) की स्थापना हैदराबाद में किया है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के पूर्व छात्रों द्वारा कई प्रकार के पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। कंप्यूटर की शिक्षा तो अब हर कदम पर दी जा रही है। सी-डैक हिंदी के माध्यम से अनेक स्थानो पर कंप्यूटर प्रशिक्षण दे रहा है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा मुक्त (पत्राचार)पद्धति से इसका प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

प्राचीन भारतीय संस्कृति में ज्ञान का महत्व था और आज भी सूचना प्रौद्योगिकी में ज्ञान ही केंद्र में है। सूचना को शीघ्र लिखने के लिए टाइपिंग (टंकण) तथा शीघ्र आशुलिपि का विकाश बहुत पहले हो चुका था। टाइपराइटर का कुंजी-पटल (की-बोर्ड) अक्षरों एवं वर्णों की आवृत्ति पर आधारित होता है।

हिंदी का तकनीकी विकास:-

1. **टाइपराइटर/ टेलीप्रिंटरः-** टाइपराइटर एक यन्त्र है जिसका प्रयोग कागज पर कोई पाठ टाइप करने के लिये किया जाता है। अंग्रेजी का मानक टाइपराइटर क्वर्टी लेआउट आधारित है। यद्यपि अंग्रेजी के लिये कई सारे लेआउट समय-समय पर बनाये गये जिनमें क्वर्टी लेआउट गति के लिहाज से सर्वश्रेष्ठ माना गया परन्तु समय के साथ क्वर्टी ही मानक बन गया। कम्प्यूटर के आविष्कार के पश्चात कीबोर्ड भी क्वर्टी लेआउट पर ही बने। 1930 के दशक में बाजार में हिन्दी टाइपराइटर आया था। हिन्दी टाइपराइटर का विकास अत्यंत जटिल कार्य था। कारण यह कि देवनागरी के अनेक चिह्न येन-केन प्रकारेण 26 कुंजियों पर ही व्यवस्थित करने थे। इसके अतिरिक्त टाइपराइटर मैकेनिकल होने के कारण कम्प्यूटर की तरह न तो मात्राओं को खुद ही जोड़

सकता था, न वर्ण-क्रम के अनुसार संयुक्ताक्षर बना सकता था, अतः सभी चिह्नों, मात्राओं, संयुक्ताक्षरों के लिये अलग से कुंजियाँ याद रखनी पड़ती थी। इस कारण टाइपराइटर का लेआउट अत्यंत जटिल हो गया। परन्तु उस समय हिन्दी टाइप करने का केवल यही एक साधन था।

2. **फैक्स-** यह एक ऐसा इलेक्ट्रानिक यंत्र है जिसके माध्यम से आप कोई भी सूचना लिखित रूप दुनिया के किसी भी कोने में पहुँचा सकते हैं। यह मशीन लगभग हर बड़े कार्यालयों द्वारा प्रयोग में लाया जाता है तथा फैक्स का लाभ यह है कि हम पूरा का पूरा पत्र, डाक्यूमेंट अथवा चित्र चंद सेकेंडों में हू-बहू दुनिया के किसी भी कोने में पहुँचा सकते हैं - चाहे वह देवनागरी में लिखा हुआ हो या रोमन में।

3. **कंप्यूटर तथा अन्य उपकरण:-** कंप्यूटर में नागरी विधि तथा अन्य भारतीय लिपियों के प्रयोग की दिशा में 'जिस्ट' प्रौद्योगिकी ने क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया। कंप्यूटर को भारतीय भाषाओं के अनुकूल बनाने की दिशा में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के इंजीनयरों द्वारा 'जिस्ट' के रूप में जो तोहफा प्रदान किया गया वह चमत्कार ही कहा जायेगा। 'जिस्ट' वस्तुतः एक्रोनिम है, जो ग्राफिक एंड इंटेलिजेंस बेस्ड स्क्रिप्ट टेक्नोलॉजी के प्रथम अक्षरों जी.आई.एस.टी से बना है। भारत के लिपियों की विशेषता यह है कि इनकी वर्णमाला मूलतः एक ही है। भारतीय लिपियों की इस विशेषता ने ही भारतीय इंजीनियरों को इस दिशा में प्रेरित किया। 'क' अक्षर चाहे देवनागरी का हो, चाहे अन्य किसी भारतीय लिपि का, यहाँ तक की द्रविड़ भाषा 'तमिल' का उन सब के लिए अब एक समान कोड है। इस कोड को इलेक्ट्रानिक विभाग ने सुनिश्चित कर दिया। जिस्ट कार्ड की सहायता से ही एक ही कुंजी पटल पर भारतीय लिपियों को स्थापित कर दिया गया। फलतः एक ही व्यक्ति हिंदी के अलावाँ बंग्ला या तेलगु जानता है तो वह उसी कम्प्यूटर पर सरलता से कार्य कर सकता है। 'जिस्ट' तकनीक ने ऐसा कम्प्यूटर उपलब्ध कर दिया जिससे अंग्रेजी के अतिरिक्त भारत की सभी प्रमुख भाषाओं में टंकण किया जा सकता है।

जिस्ट को विकसित करने का श्रेय भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर को है, पर इसके विकाश में सी-डैक पुणे ने भी योगदान दिया है। भारतीय लिपियों की अंतर्निहित समानता के आधार पर 'इस्की' नामक एक ऐसी मानक कोडिंग प्राणाली को विकसित किया गया जिसके अंतर्गत सभी भारतीय भाषाएं तथा रोमन लिपि पर आधारित यूरोपिय भाषाएं आ जाती हैं। इसके माध्यम से न केवल भारतीय भाषाएं वरन् अंग्रेजी को भी टंकित किया जा सकता है।

आधुनिक युग में तकनीक के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रयोग- आज का युग तकनीक का युग है। तथा हम तकनीक का प्रयोग कर समय व उर्जा की बचत का प्रयास करते हैं। उदाहरण के तौर पर अब कोई पहले जैसा 25 पैसा या 75 पैसा वाला अंर्तदेशीय पत्र खरीद कर चिट्ठियाँ लिखना पसंद नहीं करता इसकी बजाय हम चुटकियों में एस.एम.एस या ई-मेल टाइप कर बिना समय गवाँए अपना कार्य सम्पादित करते हैं। आज कल हम सभी कंप्यूटर पर आसानी से टाइपिंग कर लेते हैं। कंप्यूटर पर हिंदी में टाइप करने के लिए देवनागरी के 2 प्रकार के फॉन्ट होते हैं।

यूनिकोड फॉन्ट- ये फॉन्ट प्रत्येक अक्षर के लिए एक विशेष नम्बर प्रदान करता है। इसके द्वारा एक ही दस्तावेज में अनेकों भाषाओं के टेक्स्ट लिखे जा सकते हैं।

नॉनयूनिकोड- इसमें उपरोक्त सुविधा नहीं उपलब्ध होती है।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकाश का संबंध भाषा के आधुनिकीकरण से है। भाषा के आधुनिकीकरण के दो संदर्भ है- पहला यह कि भाषा आधुनिक प्रयोजनों के अनुकूलविकासित हो तथा दूसरा यह कि भाषा से संबंधित यांत्रिक साधनों का विकास

हो। आमतौर पर यांत्रिक साधनों के विकास को वैज्ञानिक विकास भी कहा जाता है।

भाषा आधुनिक वैज्ञानिक प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त हो सके, इसकी कुछ शर्तें हैं। पहली शर्त यह है कि भाषा आधुनिक जीवन के सारे प्रसंगों को समाविष्ट करती हो। इसका अर्थ यह हुआ कि इन्टरनेट से लेकर मार्केट इकॉनामी तक जितनी स्थितियाँ हमारे सामने हैं, उन सबके लिये हमारी भाषा में सरल तथा सहज शब्द हों। दूसरी आवश्यकता इस बात की है कि आधुनिक प्रशासन तंत्र में जिन पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग करना आवश्यक होता है, उनका विकास हो। तीसरी बात यह है कि भाषा अपने सभी स्तरों पर मानकीकृत हों। इन स्तरों में ध्वनि, वर्ण, शब्द, वाक्य रचना, लिपि तथा वर्तनी सम्मिलित हैं। इस विकास के स्तर को छूने वाली भाषा को वैज्ञानिक भाषा कहा जाता है।

हिंदी का वैज्ञानिक विकास

हिंदी के संदर्भ में विचार करें तो पिछले कुछ दशकों में हिंदी के वैज्ञानिक विकास पर काफी ध्यान दिया गया है। यह मुख्यतः चार स्तरों पर दिखता है-

1. मानकीकरण के प्रयास

2. पारिभाषिक शब्दावली का विकास

3. अनुवाद कार्य की प्रगति

4. हिंदी के टंकण आदि से जुड़ी तकनीकों का विकास

1. मानकीकरण के प्रयास- मानकीकरण के प्रयास बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही दिखने लगते हैं तथा धीरे-धीरे हिंदी का मानकीकरण सरकारी सहायता के साथ लगभग पूरा हो गया है।

2. परिभाषिक शब्दों का विकास-

भाषा के वैज्ञानिक विकास का दूसरा प्रमुख कार्य है पारिभाषिक शब्दों का विकास। इस संबंध में 1955 में राजभाषा आयोग की संस्तुतियों के आधार पर भारत सरकार ने दो आयोगों का गठन किया है- वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग तथा विधायी (शब्दावली) आयोग। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग को विधि क्षेत्र को छोड़कर अन्य सभी विषयों के पारिभाषिक शब्दों के निर्माण का दायित्व सौंपा गया। विधायी (शब्दावली) आयोग का काम था कि विधि क्षेत्र में काम आने वाली सभी प्रयुक्तियों को वह हिंदी में समतुल्य रूप में प्रस्तुत करें। यह दोनों अयोग अपनी क्षमता के अनुसार लगातार काम करते रहे हैं। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग वर्तमान समय में शिक्षा मंत्रालय के अधीन कार्य कर रहा है। तथा इसने विज्ञान,वाणिज्य तथा मानविकी क्षेत्रों से संबंधित कई विषयों की मानक शब्दावली तैयार की है। विधायी (शब्दावली) आयोग, जो कि अब विधि मंत्रालय के एक विभाग के रूप में काम कर रहा है, ने भी विधि क्षेत्र में परिभाषिक शब्दावली का तीव्र विकास किया है।

3. अनुवाद कार्य की प्रगति-

भाषा की वैज्ञानिकता का तीसरा आधार है अनुवाद कार्य की प्रगति। अनुवाद की प्रगति इसलिये आवश्यक है कि संभावनाशील हाने के बावजूद ऐतिहासिक कारणों से हिंदी विश्व स्तर के संदर्भों को अपने आवरण में नहीं समेट सकी है। आज की दुनिया राष्ट्रीय स्तर तक सीमित नहीं है बल्कि सार्वभौमिक स्तर पर परस्पर संबद्ध है। ऐसे समय में बाहर की दुनिया की जानकारी तथा उन संदर्भों की अपनी भाषा में अभिव्यक्ति आवश्यक है तथा इस कार्य के लिये अनुवाद की सहायता लेना जरूरी है। अनुवाद की जरूरत प्रशासन में इसलिए भी है कि भारत सरकार अभी द्विभाषिक नीति पर चल रही है। ऐसी स्थिति में अनुवाद की गति तथा गुणवत्ता भाषा के वैज्ञानिकीकरण में महत्वपूर्ण हो जाते हैं। भारत सरकार ने इस संबंध में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो का गठन किया है जो राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) के अधीन कार्य करता है। ब्यूरो लाखों शब्दों का अनुवाद कर

चुका है तथा पत्येक वर्ष अपने लक्ष्यों को पूरा कर रहा है।

1977 तक हिंदी में ऐसा कोई कार्यक्रम उपलब्ध नहीं था। 1977 में हैदराबाद की ई. सी. अई. एल. नामक कंपनी ने फोरट्रान नामक कंप्यूटर भाषा में पहली बार हिंदी को कंप्यूटर पर उतारा। 1980 के आस-पास दिल्ली की डी.सी.एम. नामक कंपनी ने सिद्धार्थ नामक मशीन पर शब्दमाला कार्यक्रम तैयार किया। यह हिंदी-मशीन द्विभाषी शब्द संसाधक थी, एक साथ दोनों भाषाओं में सामग्री संसाधन की सुविधा देती थी। इसी समय हैदराबाद की सी.एम.सी. नामक कंपनी ने तीन भाषाओं (अंग्रेजी, हिंदी और एक भारतीय भाषा) में शब्द संसाधन के लिए 'लिपि' नामक मशीन तैयार की। इसी तरह कई और कंपनियों तथा राजभाषा विभाग ने सॉफ्टवेयर तैयार किये, जिसमें प्रमुख हैं-

शब्दरल, अक्षर, सुलेख आदि। इन सभी कार्यक्रमों में प्रायः दो कमियाँ थी। एक तो ये लेजर मुद्रण या फोटो कंपोजिंग में प्रयुक्त नहीं हो सकते थे, तथा दूसरे इनके कुंजीपटल अलग-अलग थे और अक्षरों की बनावट में भी अंतर था। हिंदी के कंप्यूटरीकरण में कुछ और क्षेत्रों को भी जोड़ा गया है जिनमें अनुवाद तथा शिक्षण प्रमुख हैं। कंप्यूटर के माध्यम से हिंदी-अंग्रेजी अनुवाद की व्यवस्था हो सके, ऐसे कार्यक्रम का विकास करने पर बल दिया जा रहा है। ऐसे कुछ कार्यक्रम विकसित हुए भी हैं। हाल ही में, मोदी जीरोक्स ने ऐसे ही एक कार्यक्रम का प्रयोग करते हुए एक ऐसी फोटोकॉपी मशीन बनाई है जो अंग्रेजी के पाठ को हिंदी में फोटोग्राफी करती है। नए लोग हिंदी को कंप्यूटर के माध्यम से सीख सकें, इसके लिए लीला नामक एक पैकेज तैयार किया गया है जो उच्चारण, लिपि तथा मित्रों के माध्यम से बच्चों तथा विदेशियों को हिंदी का ज्ञान कराता है। अन्य प्रयासों में एक महत्वपूर्ण प्रयास स्पेलिंग चेकर (हिज्जे जाँचक) का विकाश करना है जिसपर आजकल काम चल रहा है।

4. हिंदी के टंकण आदि से जुड़ी तकनीकों का विकास-

टाइपराइटर पर हिंदी टाइपिंग मैकेनिकल टाइपराटर पर हिंदी में टाइप करने के लिए रेमिंगटन की-बोर्ड लेआउट का प्रयोग किया जाता है। यह अत्यंत कठिन लेआउट है, क्योंकि हर चिन्ह के लिए अलग-अलग कुंजियों को याद रखना पड़ता है।

कंप्यूटर पर हिंदी टाइपिंग- कंप्यूटर पर टाइपिंग दो प्रकार की होती है।

1) - नॉन यूनिकोड- यह विधि कंप्यूटर पर यूनिकोड प्रणाली के आने से पहले प्रयोग की जाती थी। इसमें पुराने समय के हिंदी फॉण्ट प्रयोग किए जाते थे। इस टाइपिंग का उपयोग सिर्फ छपाई आदि कार्य में ही होता है। किसी वर्ड प्रोसैसर में हिंदी का नॉन-यूनिकोड फॉण्ट चुनकर टाइप किया जाता है तथा उसका प्रिंट लिया जा सकता है। किसी अन्य कंप्यूटर पर वह टैक्स्ट की जगह सिर्फ कचरा (जंक टैक्स्ट) दिखता है।

2) - यूनिकोड- यूनिकोड हिंदी टाइपिंग की नई विधि है। यूनिकोड की विशेषता यह है कि यह फॉण्ट एवं कीबोर्ड लेआउटों पर निर्भर नहीं करती। आप किसी भी यूनिकोड फॉण्ट एवं किसी भी कीबोर्ड लेआउट का प्रयोग करके हिंदी टाइप कर सकते हैं। यूनिकोड फॉण्ट में लिखी हिंदी देखने के लिए उस फॉण्ट विशेष का कंप्यूटर में होना जरूरी नहीं है। किसी भी यूनिकोड हिंदी फॉण्ट के होने पर हिंदी देखी जा सकती है। अधिकतर नये ऑपरेटिंग सिस्टमों में यूनिकोड हिंदी फॉण्ट बना-बनाया आता है

गूगल इनपुट उपकरण द्वारा- यह एक टाइपिंग उपकरण है जिससे आप अपनी भाषा में कहीं भी टाइप कर सकते हैं जैसे कि एम,एस, आफिस, फेसबुक, व्हाट्सअप आदि। यह कई भाषाओं को सपोर्ट करता है। ये बहुत पुराना उपकरण है जिसका प्रयोग आज भी बहुत से लोग नहीं करते हैं। क्यों कि शायद वो इसके बारे में या इसका प्रयोग करना नहीं जानते। इस उपकरण द्वारा हिंदी टाइपिंग बहुत ही आसान है।

व्वायस टाईपिंग: कंप्यूटर पर बोलकर टाइप करने की प्रक्रिया को व्वायस टाईपिंग कहते हैं। भाषा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में स्पीच से टेक्स्ट तकनीकी एक अहम उपलब्धि है। आजकल हिंदी भाषा को फोनेटिक टाईपिंग तथा लिपि परिवर्तन के साथसाथ बोलकर टाइप करने अर्थात - कराने वाले धा उपलब्धशन की सुविडिक्टे हैं। भी आसानी से उपलब्धटूल्स /सॉफ्टवेयर का यस टाईपिंग टूल्सइसके लिए गूगल के व्वा उपयोग कर सकते हैं।

उपसंहार

इस प्रकार हमने देखा कि 1977 के बाद से हिंदी के कंप्यूटरीकरण में तीव्र प्रगति हुई है। इस तीव्र विकास में जिन संस्थाओं का प्रमुख रूप से योगदान है उनमें राजभाषा विभाग का तकनीकी प्रभाग तथा इलैक्ट्रॉनिक विभाग प्रमुख हैं। इलैक्ट्रॉनिक विभाग ने भाषा प्रौद्योगिकी मिशन का आरंभ किया था जो काफी सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहा है।

हिंदी के कंप्यूटरीकरण के लिये जिन क्षेत्रों में अभी प्रयास हो रहे हैं, वे इस प्रकार हैं-

इलैक्ट्रॉनिक हिंदी शब्दकोश

इलैक्ट्रॉनिक बहुभाषी शब्दकोश

स्पेल-चेकर (हिज्जे-जाँचक)

अनुवाद कार्य

नेटवर्किंग आदि।

स्पष्ट है कि पिछले कुछ वर्षों में हिंदी के वैज्ञानिक और तकनीकी विकास में कई महत्वपूर्ण चरण हमने पूरे किए हैं। इस क्षेत्र में अभी भी काफी चुनौतियाँ विद्यमान हैं। पहली चुनौती हिंदी में वैज्ञानिक शब्दावली के साथ कंप्यूटर के सिस्टम सॉफ्टवेयर के विकास की है। इसके साथ ही, यह भी एक चुनौती है कि हिंदी में वे सभी सुविधाएँ मौजूद हों जो अभी अंग्रेजी और रोमन के लिए है। अंत में यह भी ध्यान रखना होगा कि वैज्ञानिक और तकनीकी विकास एक सतत् चलने वाली प्रक्रिया है। अतः एक बार अंग्रेजी की बराबरी करने के बाद अपने उच्चतम स्तर को बनाए रखना भी एक चुनौती होगी-ऐसी चुनौती जो हमेशा हमारे सामने होगी और हमें सतत् विकास की प्रेरणा देती रहेगी

श्री अवनीश शुक्ला
वरि. प्रशासनिक अधिकारी

दैनिक जीवन में योग

आज की तेज रफ्तार जिंदगी में अनेक ऐसे पल है जो हमारी स्पीड पर ब्रेक लगा देते हैं | हमारे आसपास ऐसे अनेक कारण विद्यमान है जो तनाव थकान तथा चिड़चिड़ाहट को जन्म देते हैं, जिससे हमारी जिंदगी अस्त - व्यस्त हो जाती है | ऐसे में जिंदगी को स्वस्थ तथा ऊर्जावान बनाए रखने के लिए योग एक ऐसी रामबाण दवा है जो दिमाग को ठंडा तथा शरीर को स्वस्थ बनाए रखता है| योग से जीवन की गति को एक संगीतमय रफ्तार मिल जाती है |

योग हमारी भारतीय संस्कृति की प्राचीनतम पहचान है| योग धर्म आस्था और अंधविश्वास से परे एक सीधा विज्ञान है| जीवन जीने की कला है योग|

पतंजलि योग दर्शन के अनुसार :-

"योगश्चित्तवृत निरोधः"

अर्थात चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है| प्राचीन जीवन पद्धति लिए योग आज के परिवेश में भी हमारे जीवन को स्वस्थ और खुशहाल बना सकता है| आज के प्रदूषित वातावरण में योग एक ऐसी औषधि है जिसका कोई साइड इफेक्ट नहीं है| बल्कि योग के अनेक आसन जैसे कि **शवासन** हाई ब्लड प्रेशर को सामान्य करता है| जीवन के लिए संजीवनी है **कपालभाति** प्राणायाम| **भ्रामरी** प्राणायाम मन को शांति प्रदान करता है| **वक्रासन** हमें अनेक बीमारियों से बचाता है|

आज कंप्यूटर की दुनिया में दिनभर उसके सामने बैठे बैठे काम करने से अनेक लोगों को कमर दर्द एवं गर्दन दर्द की शिकायत एक आम बात हो गई है| ऐसे में **शलभासन** तथा **ताड़ासन** हमें दर्द निवारक दवा से मुक्ति दिलाता है| **पवनमुक्तासन** अपने नाम के अनुरूप पेट से गैस की समस्या को दूर करता है| यदि 24 घंटे में से महज कुछ मिनट का ही प्रयोग यदि हम योग में उपयोग करते हैं

तो अपनी सेहत को हम चुस्त-दुरुस्त रख सकते हैं| फिट रहने के साथ योग हमें पॉजिटिव एनर्जी भी प्रदान है| योग से शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता का विकास होता है| यह कहना अतिशयोक्ति ना होगा कि योग हमारे लिए हर तरह से आवश्यक है| यह हमारे शारीरिक मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है| हमारे देश के ऋषि परंपरा योग को आज समूचा विश्व भी अपना रहा है| जिसका परिणाम है कि 21 जून को "अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस" पूरी दुनिया में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है|

अंत में इतना कहना चाहूंगी की आज जिस तरह का खानपान और रहन-सहन हो गया है ऐसे में हम सब योग को अपनाएं और अपने भारतीय गौरव को एक स्वस्थ पैगाम से गौरवान्वित करें।

गीता में लिखा है -

"योग स्वयं की स्वयं के माध्यम से स्वयं तक पहुंचने की यात्रा है"

आइए हम भी इस यात्रा में शामिल हो जाएं और इस जीवन को सफल बनाएं|

**

श्रीमती जुल्फी हर्षवर्धन सोनी
पत्नि श्री हर्षवर्धन सोनी
सहायक

गोभी मंचूरियन बनाने की विधि

एक नज़र

रेसिपी क्विज़ीनः चाइनीज़
कितने लोगों के लिएः 2 – 4
समयः 30 मिनट से 1 घंटा
कैलोरीः 295
मील टाइपः वेज

आवश्यक सामग्री

एक मिडियम आकार फूल गोभी (टूकड़ों में कटे हुए)
आधा कप कॉर्न फ्लोर
पांच बड़े चम्मच मैदा
एक छोटा चम्मच अदरक लहसून पेस्ट
आधा कप पानी
स्वादानुसार नमक
तलने के लिए तेल
सॉस के लिए
दो बड़े चम्मच हरे प्याज की कलियां (बारीक कटी हुई)
डेढ़ छोटा चम्मच अदरक का पेस्ट
दो हरी मिर्च (बारीक कटी हुई)
डेढ़ छोटा चम्मच सोया सॉस
आधा छोटा चम्मच चिली सॉस
दो बड़े चम्मच टमाटर केचप
दो बड़े चम्मच तेल तलने के लिए
नमक स्वादानुसार

विधि

- सबसे पहले मीडियम आंच पर एक वर्तन में पानी उबलने के लिए रखें।
- जब पानी में उबाल आ जाए तो इसमें गोभी डालकर 3 से 4 मिनट तक उबाल लें।
- तय समय बाद आंच बंद करके गोबी को पानी से छान लें और ठंडा होने के लिए रख लें।
- अब एक बड़े बाउल या बर्तन में मैदा, कॉर्न फ्लोर, अदरक – लहसुन पेस्ट और नमक डालकर अछे से मिला लें।
- इसके बाद इसमें ज़रूरत अनुसार पानी डालकर घोल तैयार कर लें।(इसका घोल भी पकोड़े के घोल जैसा ही बनेगा, न ज्यादा गाढ़ा न ही ज्यादा पतला)
- घोल को अच्छे से फेंटने के बाद इसमें गोभी डालकर मिला लें।
- अब मीडियम आंच पर एक कड़ाही में तलने के लिए तेल गरम करें।
- यह सुनहरा हो जाए तो छान कर एक प्लेट में निकाल लें।
- इसी तरह बाकी गोभी को भी फ्राई कर लें।
- इसके बाद उसी कड़ाही में 2 बड़े चम्मच तेल छोड़कर बाकी बचा तेल निकाल लें।
- तेल में अदरक, लहसून पेस्ट, हरी मिर्च, शिमला मिर्च और प्याज डालकर 3 से 4 मिनच तक चलाते हुए भून लें।
- अब सोया सॉस, टमाटर सॉस, चिली सॉस और नमक डालें इसे लगातार चलाते हुए या टॉस करते हुए मिला लें।
- फ्राई करने के बाद इसमें गोभी डालकर 2 से 3 मिनट तक चलाते बिए या टॉस करते हुए मिला लें।
- तैयार है गोभी मंचूरियन आंच बंद करें और एक प्लेट में निकाललें।
- गर्मागरम गोभी मंचूरियन को केचप या चिली सॉस के साथ खुद भी खाएं और दूसरों को भी खिलाएं।

डॉ.(श्रीमती) साईची देवी
पत्नि श्री अवनीश शुक्ला
वरि.प्रशासनिक अधिकारी

बटें भाषा से एक कहाँ होंगे

स्वदेश में देश अनेको होंगे
बटें भाषा से एक कहाँ होंगे।
हूँ मैं उत्तर, हो पश्चिम तुम
पूर्वी क्यों जाने, क्या पश्चिम मैं।।

भाषा, बोली, संस्कार, संस्कृति
रेखा से नापी जाती है।
मैं पंजाबी, तुम बंगाली
मलियाली, तमिल, मराठा होके।।

अपार संस्कृति इस भव्य देश की
सिमटी है क्यों रेखा में।
क्या हो तुम, तुम्हारा इतिहास है क्या
कैसे जानोगे अवसादों में।।

पंजाबी को मलियाली से
जोड़े वो भाषा हिंदी है।
वार्तालाप करें जब हिंदी में
क्या मलियाली, क्या सिंधी हो।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी
सबसे उन्नत हिंदी भाषा।
हर शब्द अनन्य, हर भाव को जो
समझा दे वो हिंदी भाषा।।

जितनी प्रखर उतनी प्रकट
हिंदी भाषा की गहराई।
मुझकों तुमसे, तुमकों मुझसे
जोड़े वो हिंदी की परछाई।

भारत देश के रहवासी की
व्यक्त भाव की पीड़ा हो
या विभिन्न प्रदेशों में होने वाले
स्नेह उत्साह का आकर्षण
यह जान काहाँ से पाएंगे
जब तक हर एक भारत के रहवासी
हिंदी को ना अपनाऐंगे।।

क्यों हम हिंदी का मान करें ?
क्यों हम हिंदी का ज्ञान करें ?
टकराव अभी भी जारी है
क्योंकि .....
हमें क्षेत्रीय भाषा प्यारी है,
हिंदी तो, सरकारी जिम्मेदारी है।

जो मैं बोलू ,वो तुम बोलो
जो तुम बोलो, क्यों मैं बोलू।
जब भाव हमारे ऐसे होंगे .....
मैं पुनःदोहराता हुँ .....
स्वदेश में देश अनेको होंगे
बटें भाषा से एक कहाँ होंगे !
हुँ मैं उत्तर, हो पश्चिम तुम
पूर्वी क्यों जाने क्या पश्चिम मैं !!

श्री हर्षवर्धन सोनी
सहायक

हास्य-विनोद

पति-पत्नि में झगड़ा हो रहा था।

पति- अब तुम एक शब्द भी मत बोलना, वरना मेरे अंदर का जानवर जाग जाएगा

पत्नि- जागने दो तुम्हारे अंदर के जानवर को, भला चूहे से भी की डरता है।

एक महिला मॉल से बिस्कुट चुराते हुए पकडी गई

जज ने कहा- तुमने जो बिस्कुट की पैकेट चुराई है उसमें 15 बिस्कुट थे इसलिए तुम्हें 15 दिन की जेल की सज़ा दी जाती है।

तभी पति पीछे से चिल्लाया- जज साहब इसने साबूदाने का पैकेट भी चुराया है।

एनईसैक की उल्लेखनीय गतिविधियाँ

पद्मभूषण डॉ.के.राधाकृष्णन, पूर्व अध्यक्ष, इसरो ने एनईसैक का दौरा किया

14-15 अक्तूबर, 2019 के दौरान मानद प्रतिष्ठित सलाहाकार, अं.वि/इसरो और पूर्व अध्यक्ष, अंतरिक्ष आयोग/अध्यक्ष, इसरो/सचिव, अं.वि/पूर्व अध्यक्ष, एनईसैक,शासन परिषद का दौरा किया।

डॉ. के राधाकृष्णन के साथ एनईसैक के कर्मचारियों की वार्ता और निदेशक,एनईसैक के द्वारा एनईसैक की गतिविधियों की व्याख्या

15 अक्तूबर, 2019 को डॉ. राधाकृष्णन ने एनईसैक सुविधा का दौरा किया। सुविधा यात्रा के दौरान, निदेशक,एनईसैक ने डॉ. राधाकृष्णन को यूएवी उड़ान के प्रदर्शन के साथ-साथ एनईसैक की गतिविधियों पर एक व्यापक प्रस्तुति दी। इसके बाद एनईसैक के सभी कर्मचारियों और शोधकर्ताओं के साथ परस्पर वार्ता बैठक हुई। डॉ. राधाकृष्णन ने एनईसैक द्वारा की जा रही गतिविधियों की सराहना की और पूर्वोत्तर की बेहतरी के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी को लागू करने की आवश्यकता को पूरा करने में एनईसैक द्वारा की गई प्रगति पर प्रसन्नता व्यक्त की। आईआईएम, शिलांग के लिए आगे बढ़ने के पहले पद्मभूषण श्री राधाकृष्णन ने विक्रम साराभाई शताब्दी समारोह कार्यक्रम के तहत इसरो द्वारा एनईसैक को प्रदान की गई प्रदर्शनी बस "स्पेस ऑन व्हील्स" को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

"स्पेस ऑन व्हील्स" प्रदर्शनी बस के सम्मुख डॉ राधाकृष्णन के साथ एनईसैक, कर्मचारीगण

राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार 2019

भूविज्ञान के अनुप्रयोग में अपने महत्वपूर्ण योगदान के लिए डॉ. दिब्यज्योति चूतिया, वैज्ञा.अभि.एसएफ को प्रौद्योगिकी पर राष्ट्रीय भूविज्ञान पुरस्कार 2019 प्राप्त हुआ।

100 फीट ऊंचे फ्लैगपोस्ट

15 अगस्त 2020 को एनईसैक में राष्ट्र का 74वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। कोविड 19 महामारी के कारण एनईसैक के कर्मचारियों का एकत्रित होना प्रतिबंधित था और मात्र वरिष्ठ वैज्ञानिक ही इस इस कार्यक्रम के दौरान उपस्थित थे। निदेशक, एनईसैक ने राष्ट्रगान गायन के पूर्व प्रातः 9.00 बजे राष्ट्रीय ध्वज फहराया। री-बोई जिले की उपायुक्त श्रीमती आर एम कुर्बाह, आईएएस ने इस अवसर में अतिथि के रूप में शिरकत की और एनईसैक में नवनिर्मित 100 फीट ऊंचे फ्लैगपोस्ट का उद्घाटन किया और केंद्र में संवर्धित एनईआर-डीआरआर सुविधा का उद्घाटन किया। एनीसैक के विभिन्न वैज्ञानिकों के द्वारा उनकों एनईसैक के विभिन्न डैशबोर्ड सेवाओं का प्रदर्शन एनईआर-डीआरआर कक्ष मं किया गया। उन्होंने उन्नत वैज्ञानिक अनुसंधान और क्षेत्र में विकास की योजना बनाने में सहायता प्रदान करने के लिए एनईसैक के प्रयासों की सराहना की।

भारतीय संविधान को अपनाने का 70वाँ वर्षगाँठ

एनईसैक ने मई से 26 नवंबर 2020 तक भारतीय संविधान 70वाँ वर्षगाँठ मनाया।

गैंगटोक में विक्रम साराभाई शताब्दी समारोह कार्यक्रम

बाल-चित्रकला

कुमारी डोरोथी हैंडीक, कक्षा - IV

सुपुत्री डॉ. बिजय कृष्ण हैंडीक, वैज्ञा./अभि एसएफ

कुमारी श्वेतलाना एम.पेबम, कक्षा - III

सुपुत्री डॉ. रॉकी पेबम, वैज्ञा./अभि एसई

कुमारी अलंकृता भराली गोगोई, कक्षा – III

सुपुत्री श्रीमती रेखा भराली गोगोई, वैज्ञा./अभि एसई

कुमारी पुलकिता हैंडीक, कक्षा - II

सुपुत्री डॉ. बिजय कृष्ण हैंडीक, वैज्ञा./अभि एसएफ

कुमारी डाशा नोंगकेनृह, कक्षा - I

सुपुत्री डॉ. जेनिता एम.नोंगकेनृह, वैज्ञा./अभि. 'एसएफ'

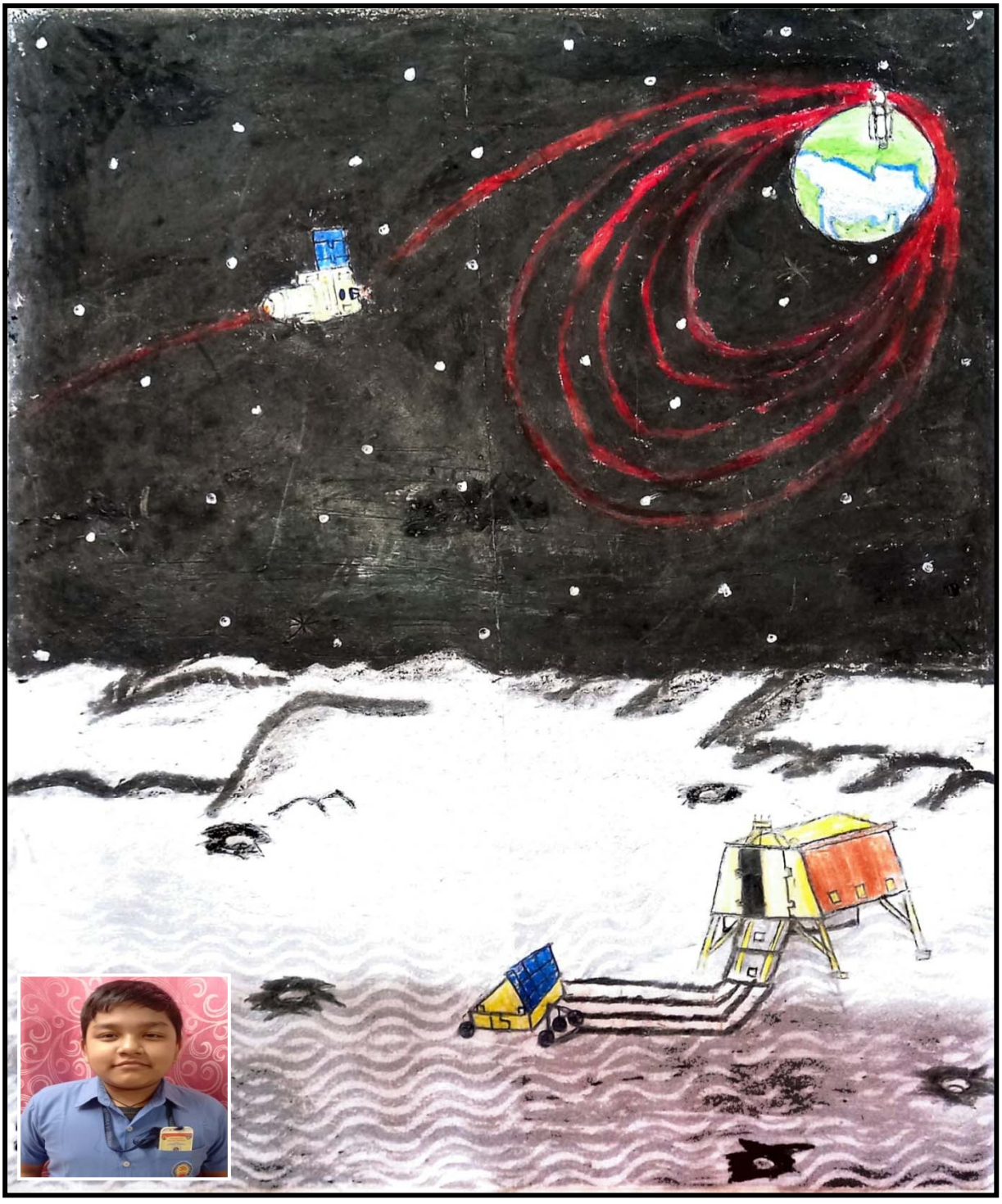

कुमार अंतरीप बोरगोहाई

सुपुत्र डॉ. अरूप बरगोहाई, वैज्ञा./अभि एसई